वर्ष 24, अंक 323, पृष्ठ 08, मूल्य: 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 30 मई 2025 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

बिहार पहुंचे नरेंद्र मोदी, बीजेपी दफ्तर तक भव्य रोड शो

पटना हवाई अड्डे के नए टर्मिनल भवन किया उद्घाटन

बिहार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार पहुंचे हैं। उन्होंने पटना हवाई अड्डे के नए टर्मिनल भवन का दौरा और उद्घाटन किया। इस दौरान उनके साथ राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार नौजूद रहे। वहीं, दोनों डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा ने भी उनका स्वागत किया। वहीं एयरपोर्ट पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के इंतजाम किए गए हैं। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भव्य रोड शो किया। सड़क के दोनों ओर खड़े लोगों का मोदी ने अभिवादन स्वीकार किया।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद पहली बार मोदी बिहार पहुंचे हैं। वह आज रात बिहार में ही रुकने वाले हैं। टर्मिनल का निर्माण लगभग 1,200 करोड़ रुपये की लागत से किया गया है। मोदी ने बिहटा हवाई अड्डे के नए सिविल एन्क्लेव की आधारशिला भी रखी,

जिसे 1,410 करोड़ रुपये में बनाया जाएगा। अभिनंदन समारोह गैर-राजनीतिक थी। जायसवाल ने कहा कि ह्यऑपरेशन सिंदूरह्ल की सफलता के बाद प्रधानमंत्री का बिहार का यह पहला दौरा है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को कहा कि ह्यऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है और चेतावनी दी कि आतंकवाद को प्रायोजित करने वालों को भारी कीमत चुकानी होगी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पाकिस्तान को पहले ही ह्यद्यउसके घर में घुसकर तीन बारह्लह्ल मारा जा चुका है। ह्यऑपरेशन सिंदूरह्ल के बाद पश्चिम बंगाल में अपनी पहली रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने सिंदूर के साथ क्षेत्र के गहरे सांस्कृतिक और भावनात्मक संबंध का जिक्र किया और दुर्गा पूजा के दौरान बंगाली महिलाओं द्वारा मनाए जाने वाले पारंपरिक अनुष्ठान ह्यसिंदूर खेलाह्ल का उल्लेख किया।

मोदी ने कहा, ह्यद्यमैं सिंदूर खेला की पवित्र भूमि पर खड़ा हूं, तो यह उचित है कि हम आतंकवाद के खिलाफ एक नए संकल्प ऑपरेशन सिंदूर के बारे में बात करें। उन्होंने कहा, 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए क्रूर आतंकवादी हमले ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया। पश्चिम बंगाल में जो दर्द और गुस्सा है, उसे गहराई से समझा जा सकता है। मैं आपके आक्रोश को महसूस कर सकता हूं।

बंगाल में मची चीख-पुकार, नहीं चाहिए निर्मम सरकार- मोदी

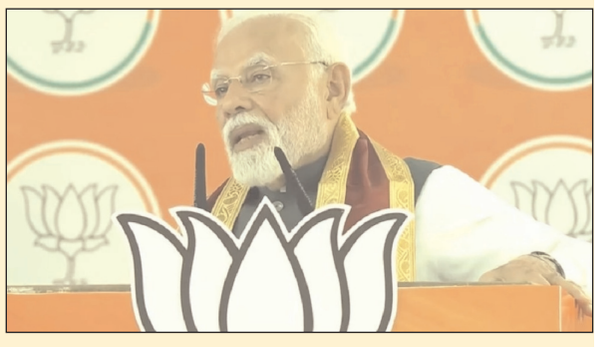

मुर्शिदाबाद दंगों पर अपनी पहली सार्वजनिक टिप्पणी में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ममता बनर्जी की को निर्मम बताते हुए तीखा हमला किया और कहा कि तृणमूल कांग्रेस के पार्षद लोगों के घरों को जलाने के लिए चिन्हित करने में शामिल थे। उनकी यह टिप्पणी वक्फ संशोधन अधिनियम के खिलाफ 11 और 12 अप्रैल को मुर्शिदाबाद के समसेरगंज और धुलियान इलाकों में भड़की सांप्रदायिक हिंसा के हफ्तों बाद आई है। दंगों में तीन लोगों की मौत हो गई जबकि कई अन्य घायल हो गए।

मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि मुर्शिदाबाद में जो कुछ हुआ... मालदा में जो कुछ हुआ... वो यहां की ळटउ सरकार की निर्ममता का उदाहरण है। उन्होंने कहा कि बंगाल की जनता को अब ळटउ सरकार के सिस्टम पर भरोसा नहीं है। यहां की जनता के पास अब सिर्फ कोर्ट का ही आसरा है। इसलिए पूरा बंगाल कह रहा है - बंगाल में मची चीख-पुकार, नहीं चाहिए निर्मम सरकार! उन्होंने कहा कि तुष्टिकरण के नाम पर गुंडागर्दी की खुली छूट दी गई। कल्पना कीजिए कि जब सरकार चलाने वाली पार्टी के लोग लोगों के घरों को पहचान कर जला दें और पुलिस मूकदर्शक बनी रहे, तो क्या भयावह स्थिति होगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं बंगाल के गरीब लोगों से पूछता हूं कि क्या सरकार ऐसे चलती है? यहां हर मुद्दे पर कोर्ट को दखल देना पड़ता है। नहीं तो कोई हल नहीं निकलता। बंगाल के लोगों को अब टीएमसी सरकार पर भरोसा नहीं रहा। उन्होंने कहा कि ळटउ सरकार ने अपने शासनकाल में हजारों टीचर्स का फ्यूचर बर्बाद कर दिया है। ळटउ के घोटालेबाजों ने सैकड़ों गरीब परिवार के बेटे-बेटियों को अंधकार में धकेल दिया है। मोदी ने कहा कि आज देशभर में 70 वर्ष से ऊपर के बुजुर्गों को 5 लाख रुपए तक मुफ्त इलाज की सुविधा मिल रही है। मैं तो चाहता हूं कि पश्चिम बंगाल में भी 70 वर्ष से ऊपर के सभी बुजुर्गों को मुफ्त इलाज की सुविधा मिले। लेकिन ळटउ सरकार ये नहीं करने दे रही है।

वहीं, मोदी ने आगे कहा कि 22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकियों ने जो बर्बरता की, उसके बाद पश्चिम बंगाल में भी बहुत गुस्सा था। आपके भीतर जो आक्रोश था, आपका जो गुस्सा था, उसको मैं भलीभांति समझता था। आतंकवादियों ने हमारी बहनों का सिंदूर मिटाने का दुस्साहस किया। हमारी सेना ने उनको सिंदूर की शक्ति का अहसास करा दिया। उन्होंने कहा कि हमने आतंक के उन ठिकानों को तबाह किया।

'क्यों करते हैं ऐसा वादा, जो...'- प्रीत सिंह

नई दिल्ली:

भारतीय वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल अमर प्रीत सिंह ने दिल्ली में आयोजित सीआईआई वार्षिक व्यापार शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए गुरुवार (29 मई, 2025) को भारत की रक्षा खरीद में जवाबदेही और तत्परता की मांग की है. उन्होंने प्रमुख रक्षा खरीद परियोजनाओं में देरी पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि कई बार ऐसा हुआ है कि अनुबंध पर साइन करते समय हमें पता होता है कि ये सिस्टम कभी नहीं आएंगे. एयर चीफ मार्शल ने नाराजगी जताते हुए कहा कि टाइमलाइन एक बड़ा मुद्दा है. एक भी प्रोजेक्ट

कभी समय पर पूरा नहीं हुआ है. उन्होंने कहा कि जब समय पर कोई भी प्रोजेक्ट पूरा ही नहीं होता तो हर बार वायदा क्यों किया जाता है?. उन्होंने डिफेंस सिस्टम में देरी होने के कई मामले गिनवाए, खासतौर पर स्वदेशी परियोजनाओं में देरी के मुद्दों का जिक्र किया.

'ऑर्डर किए गए 83 विमानों में से अब तक एक भी नहीं मिला'

एयरफोर्स चीफ ने लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट कार्यक्रम का हवाला देते हुए कहा कि तेजस ट'-1अ फाइटर जेट की डिलीवरी रुकी हुई है, जो फरवरी 2021 में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ हस्ताक्षरित 48,000 करोड़ रुपये के अनुबंध के तहत है. उन्होंने बताया कि ऑर्डर किए गए 83 विमानों में से अब तक एक भी विमान नहीं दिया गया है, जबकि डिलीवरी मार्च 2024 में शुरू होने वाली थी.वायुसेना प्रमुख के मुताबिक देरी ने कई प्रमुख परियोजनाओं को प्रभावित किया है, जिसमें तेजस एमके1ए लड़ाकू विमान भी शामिल है।

बात तभी होगी जब..., शहबाज शरीफ ने जताई भारत से बातचीत की इच्छा तो विदेश मंत्रालय ने दिया दो टूक जवाब

नई दिल्ली: पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने एक बयान जारी कर कहा था कि वे भारत के साथ आतंकवाद विरोधी मुद्दों पर चर्चा सहित बातचीत करने की इच्छा रखते हैं. इस पर भारत के विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को दो टूक जवाब दिया है.

भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने गुरुवार (29 मई, 2025) को कहा, जहां तक पाकिस्तान के साथ हमारे संबंधों का

सवाल है, हमारा रुख पूरी तरह से स्पष्ट है.ह्ल उन्होंने कहा, कोई भी संबंध द्विपक्षीय होना चाहिए. हम इस बात को भी दोहराना चाहेंगे कि आतंकवाद और बातचीत एक साथ नहीं चल सकते हैं.

कुख्यात आतंकवादियों को भारत को सौंपे पाकिस्तान- विदेश मंत्रालय जायसवाल ने कहा, पाकिस्तान को उन सभी कुख्यात आतंकवादियों को भारत को सौंपना होगा, जिनके रिकॉर्ड और सूची हमने कुछ साल पहले उन्हें सौंपी थी.

इसके अलावा जम्मू-कश्मीर पर बातचीत तभी होगी जब पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर पूरी तरह से खाली हो जाएगा और जब पाकिस्तान हमें यह इलाका सौंप देगा।

कर्नाटक में इंजीनियरिंग छात्र ने आत्महत्या की

कर्नाटक

कर्नाटक के कोडागु जिले के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रथम वर्ष की छात्रा ने बुधवार को अपने छात्रावास के कमरे में कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। छात्रा की पहचान तेजस्विनी के रूप में हुई है, जो 19 साल की थी और पोन्नमपेट के हल्लिगट्टु कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग कोर्स में नामांकित थी। उसके कमरे से एक नोट बरामद किया गया।

बीजेपी को जनता ने दिए 0 नंबर- आतिशी

नई दिल्ली:

दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार अपने 100 दिन पूरा करने जा रही है। इसको लेकर बीजेपी ने अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाने का प्लान तैयार कर रही है। वहीं आम आदमी पार्टी (आप) बीजेपी सरकार को घेर रही है। आप ने भाजपा की दिल्ली सरकार के असफलता से भरे 100 दिनों का रिपोर्ट कार्ड जारी किए है। दिल्ली विधानसभा में विपक्ष की नेता और आप नेता आतिशी ने

कहा कि भाजपा ने दिल्ली के लोगों का जीवन नरक बना दिया है। सुधार करना या अपने वादे पूरे करना तो दूर की बात है, भाजपा ने अपने कार्यकाल के 100 दिनों में दिल्ली में पिछले 10 सालों से चल रही नीतियों को भी रद्द कर दिया।

आतीशी ने कहा कि आज आप भाजपा की सरकार के पहले 100 दिनों की विफलता का रिपोर्ट कार्ड जारी कर रही है। दिल्ली में भाजपा सरकार हर पहलू में विफल है।

जयराम रमेश का विवादित बयान, भाजपा ने किया पलटवार

हमारे सांसद घूम रहे हैं, आतंकवादी भी...

नई दिल्ली: कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने गुरुवार को पहलगाम हमले के पीछे के आतंकवादियों और वैश्विक मंच पर भारत के आतंकवाद विरोधी संदेश का प्रतिनिधित्व करने वाले सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल सांसदों के बीच तुलना करके विवाद खड़ा कर दिया। कांग्रेस नेता की टिप्पणी के बाद, भाजपा ने बिना समय गंवाए तीखी आलोचना करते हुए कहा कि जयराम रमेश ने सबसे घृणित तुलना की है। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि पहलगाम आतंकी हमले के पीछे के आतंकवादी चार अन्य हमलों में शामिल थे और आज खुलेआम घूम रहे हैं। इसके बाद उन्होंने सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के लिए चुने गए सांसदों की तुलना आतंकवादियों से करते हुए कहा कि हमारे सांसद और

आतंकवादी दोनों ही खुलेआम घूम रहे हैं।

जयराम रमेश ने एएनआई से कहा कि सुनने में आ रहा है कि 25 और 26 जून को विशेष सत्र बुलाया जा सकता है क्योंकि यह आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ है। हमारे देश में 2014 से अघोषित आपातकाल लागू है। वह 50 साल पहले जो हुआ उसके लिए विशेष सत्र बुलाना चाहते हैं? आज के सवालों से ध्यान हटाने के लिए वे इस बारे में बात कर रहे हैं। हम आरएसएस की भूमिका को भी उजागर करेंगे, हम हकीकत को पूरे देश के सामने रखेंगे। उन्होंने कहा कि पहलगाम के ये आतंकवादी चार हमलों में शामिल थे और फिर भी वे इधर-उधर घूम रहे हैं। हमारे सांसद घूम रहे हैं और आतंकवादी भी घूम रहे हैं। हम ये सवाल गंभीरता से पूछ रहे हैं।

कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि वे इन सवालों का जवाब नहीं देते हैं। भाजपा केवल कांग्रेस पार्टी को निशाना बनाती है। उनका हमला कांग्रेस पार्टी पर है, आतंकवादियों पर होना चाहिए। पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। आतंकवादियों को गिरफ्तार किया जाना चाहिए। हर दिन जो मिसाइलें दागी जा रही हैं।

अनुष्का के भाई आकाश यादव को पशुपति पारस ने पार्टी ने निकाला, तेज प्रताप विवाद के बीच एक्शन

बिहार

अनुष्का यादव-तेज प्रताप यादव विवाद से जुड़े एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में, राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी (आरएलजेपी) ने अनुष्का यादव के भाई आकाश यादव को छह साल के लिए पार्टी से निष्कासित कर दिया है। यह फैसला पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पशुपति कुमार पारस ने लिया। आकाश यादव अपनी बहन अनुष्का यादव और आरजेडी नेता तेज प्रताप यादव के समर्थन में मीडिया से सक्रिय रूप से बात कर रहे थे, जिससे काफी ध्यान आकर्षित हो रहा था। उनका बार-बार सार्वजनिक रूप से सामने आना और टिप्पणी करना जाहिर तौर पर आरएलजेपी नेतृत्व को पसंद नहीं आया। मीडिया में उनके बयानों के बाद पार्टी ने अनुशासनात्मक कार्रवाई की और अनुशासनहीनता तथा पार्टी नीतियों के विरुद्ध कार्य करने को उनके निष्कासन का कारण बताया। तेज प्रताप यादव को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) से निकाले जाने की निंदा करते हुए।

जगतगुरु रामभद्राचार्य ने आर्मी चीफ से दक्षिणा में मांग लिया POK

चित्रकूट

थल सेनाध्यक्ष (सीओएएस) जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने मध्य प्रदेश के चित्रकूट में आध्यात्मिक गुरु जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य के आश्रम का दौरा किया, जहां उन्होंने आध्यात्मिक गुरु का आशीर्वाद लिया। इस यात्रा के दौरान जगद्गुरु ने सेना प्रमुख से पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) को भारत में वापस लाने का आग्रह किया। आध्यात्मिक नेता ने गुरुवार को जनरल द्विवेदी के साथ अपनी बातचीत का विवरण दिया, जो बुधवार को श्री तुलसी पीठ चित्रकूट धाम के दौरे पर आए थे। जनरल द्विवेदी के आश्रम दौरे के

दौरान आध्यात्मिक नेता जगद्गुरु ने बताया कि उन्हें राम मंत्र की दीक्षा दी गई थी, जिसे भगवान हनुमान ने माता सीता से प्राप्त किया था और उसके बाद उन्होंने लंका पर विजय प्राप्त की थी। सेना प्रमुख ने आश्रम में संतों और छात्रों से भी बातचीत की और राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति सेना की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। इस यात्रा के बारे में बात करते हुए जगद्गुरु ने कहा कि भारतीय सेना प्रमुख मेरे पास आए।

खौफनाक! दादी ने पांच महीने की पोती का ब्लेड से गला रेता

बहू को सबक सिखाना चाहती थी सास

सहारनपुर

कहते है कि पोता-पोती अपने दादा-दादी की जान होते हैं... वो बच्चों को इतना लाड करते हैं कि कई बार बच्चे अपने मां-बाप के पास उतना अच्छा फील नहीं करते हैं जितना अपना दादा-दादी के पास प्यार महसूस करते हैं। काफी खूबसूरत रिश्ता होता है दोनों का। लेकिन सहारनपुर में एक ऐसा घटना घटी है जिसे सुनकर आपके पैरों तले जमीन खिसक जाएगी।

सहारनपुर जिले के गागलहेड़ी थाना क्षेत्र के ग्राम कुतुबपुर कुसेनी में पुत्रवधू को सबक सिखाने के लिए सास ने पति और बेटी के साथ मिलकर पांच माह की पोती की कथित तौर पर गला रेतकर हत्या कर दी। बच्ची की दादी-दादा और बुआ को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

सास और बहू के बीच लंबे समय से झगड़ा चल रहा था

पुलिस के अनुसार सास और बहू के बीच लंबे समय से झगड़ा चल रहा था और महिला अपनी पुत्रवधू को सबक सिखाना चाहती थी। पुलिस ने कहा कि इसी रंजिश में सास ने पति और बेटी के साथ मिलकर बुधवार को कथित अपराध को अंजाम दिया। सहारनपुर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) रोहित सजवाण ने बताया कि ग्राम कुतुबपुर कुसेनी में पांच माह की इशिका की गला रेतकर उस समय हत्या कर दी गई जब वह अपनी मां

शिवानी के साथ घर में सोई हुई थी।

बहू को सबक सिखाना चाहती थी सास

उन्होंने बताया कि सुबह जब शिवानी उठी तो उसने बच्ची को खून में लथपथ पाया जिसके बाद परिजन उसे लेकर चिकित्सालय पहुंचे जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सजवाण ने बताया कि शिवानी का पति केरल में सैलून चलाता है और वही रहता है। उन्होंने कहा कि पुलिस ने जब मामले में जांच शुरू की तो संदेह घर के सदस्यों पर गया क्योंकि 14 लोगों के परिवार में किसी बाहरी के आकर वारदात को अंजाम देने की संभावना नहीं दिखी।

सजवाण ने कहा कि पुलिस पूछताछ में बच्ची की दादी सरिता ने वारदात को अंजाम देने की बात स्वीकार की और उसने बताया कि वह पोती की हत्या कर बहू को झूठे मुकदमे में फंसाना चाहती थी। एसएसपी ने बताया कि सरिता ने रात को चाय में नींद की दवा मिलाकर शिवानी को पिला दी ताकि वह जाग न सके और तड़के चार बजे वह बहू के कमरे में गई और उसने इशिका का मुंह दबाकर पति धर्मेंद्र द्वारा दिये गये ब्लेड से उसका गला रेत दिया।

नगर पंचायत शंकरगढ़ : कुछ मिनट की बारिश ने बहा दी नगर पंचायत की साख

•सड़कों पर तैरती नजर आईं 'कागज की कश्तियाँ' •घरों के अंदर घुसा नाली का गंदा बदबूदार पानी

जाम नालियों के चलते मोहल्लों के लोगों के घरों में घुसा गंदा व बदबूदार पानी

बारिश के बाद सड़क पर बहता नालियों का गंदा पानी

आलोक गुप्ता

शंकरगढ़। गुरुवार की दोपहर आई कुछ ही मिनटों की बारिश ने नगर पंचायत शंकरगढ़ की तैयारियों की कलई खोल दी। जिस बारिश से गर्मी से राहत की उम्मीद थी, वह नगर के लिए आफत बनकर आई। सफाई व्यवस्था की बदहाल स्थिति ने लोगों को नाराज और सिस्टम को बेनकाब कर दिया।

नगर के सभी 12 वार्डों में नालियां उफन गईं और सड़कों ने गंदे नाले का रूप ले लिया। हालात ऐसे हो गए कि मोहल्लों की गलियों से लेकर मुख्य सड़कों तक बदबूदार पानी जमा हो गया। इस बीच एक और परेशान करने वाला दृश्य सामने आया कि कई मोहल्लों में नाली का पानी घरों के अंदर तक घुस गया, जिससे लोगों का सामान भी खराब हुआ और बच्चों-बुजुर्गों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा।

शंकरगढ़ के वार्ड नंबर 11, 12 और 2 से लोगों की शिकायतें सामने आई हैं कि जलभराव के कारण उनके घरों में गंदा पानी घुस गया, और नगर पंचायत से बार-बार शिकायत करने के बावजूद कोई सुनवाई नहीं हुई।

जहाँ एक तरफ बड़े लोग हालात से परेशान रहे, वहीं बच्चों ने इन तकलीफों के बीच भी खेल निकाल लिया। सड़कों पर बहते गंदे पानी में बच्चों ने कागज की नावें तैरा कर जैसे हालात पर तंज कस दिया। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि नगर पंचायत केवल कागजी सफाई करती है, जमीनी हकीकत हर बारिश में उजागर हो जाती है।

एक दुकानदार ने गुस्से में कहा हर बार यही होता है। नालियां सालभर जाम रहती हैं। ऊपर से विकास के बोर्ड टंगवा दिए जाते हैं। सच्चाई तो घरों में घुसा गंदा पानी है।अब सवाल उठता है,

सड़क पर भरा बारिश का पानी

क्या नगर पंचायत इस बार किसी स्थायी समाधान की ओर कदम उठाएगी? या फिर अगली बारिश में फिर से शंकरगढ़ के घरों और सड़कों पर बहती नजर आएंगी 'कागज की कश्तियाँ'?

हल्की बारिश में ही जलमग्न हुई सड़क

आस्था को चुनावी हथियार न बनाएं संस्कृति राजनीति का साधन नहीं होनी चाहिए : अंकित सिंह यादव

धार्मिक प्रतीकों का राजनीतिक इस्तेमाल ठीक नहीं। पीएम मोदी की 'हर घर सिंदूर' पहल पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अंकित सिंह यादव की प्रतिक्रिया

अखंड भारत संदेश

अंकित सिंह यादव

प्रयागराज। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देशभर में हर घर सिंदूर भेजने की पहल को लेकर उत्तर प्रदेश कांग्रेस सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अंकित सिंह यादव ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने इसे भारतीय संस्कृति और धार्मिक आस्था के साथ राजनीतिक छेड़छाड़ करार दिया है।

अंकित सिंह यादव ने कहा- सिंदूर हमारे सनातन धर्म में विवाह, समर्पण और स्त्री सम्मान का प्रतीक है। यह एक पवित्र धार्मिक प्रतीक है, जिसे राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल करना हमारी संस्कृति का अपमान है। भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना पर आधारित है, जिसमें सभी धर्मों और परंपराओं का सम्मान किया जाता है।प्रधानमंत्री को चाहिए कि वे धर्म को एकता और सांस्कृतिक चेतना का माध्यम बनाएं, न कि चुनावी हथियार। यादव ने कहा कि आस्था का सम्मान तभी होता है जब नीति और नीयत दोनों स्पष्ट हों। क्या हमारी संस्कृति यही सिखाती है कि प्रतीकों को दिखाया जाए और समस्याओं को अनदेखा किया जाए?ह्व

अंकित सिंह यादव ने केंद्र सरकार से अपील की कि भारतीय संस्कृति की रक्षा भावनाओं की राजनीति से नहीं बल्कि न्याय, शिक्षा और समानता के मूल्यों से की जानी चाहिए। संस्कृति केवल परंपरा नहीं, आचरण भी है। यदि नेतृत्व को वास्तव में महिलाओं की गरिमा की चिंता है, तो उन्हें नीति में उसका प्रतिबिंब दिखाना चाहिए, न कि केवल डिब्बों में सिंदूर भेजकर।

घर घुस कर तोड़ फोड़ मार पीट चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम बडौरा निवासी रामचन्द्र यादव पुत्र मेवा लाल का आरोप उसके विपक्षी एक राय होकर लाठी डंडा कुल्हाड़ी लेकर घर में घुस आए और घर में तोड फोड करते हुए गालियां देते हुए जान से मारने की धमकी देकर उसके पुत्र सत्यम यादव पर हमला बोल कर लहुलुहान कर दिए। जिससे उसका होठ कट गया और वह बेहोश हो कर तड़पने लगा। गुहार लगाने पर लोगों को आता देख कर विपक्षी भाग गए। रामचन्द्र ने मऊआइमा थाने में राज यादव, शुभम यादव, विभु यादव, फूलचंद्र के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

पुलिस आयुक्त के आदेश पर दो के खिलाफ एससी एसटी में मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके के उधम पुर खगिया गांव में नाली के विवाद में विपक्षी एक महिला की पुत्री को मार पीट कर जख्मी कर दिए थे । थाने में मुकदमा न लिखा जाने पर पुलिस आयुक्त के आदेश पर मऊआइमा पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम उधमपुर खगिया निवासनीय शिमला देवी पत्नी ननकू राम का आरोप है कि 13 अप्रैल को विपक्षी उसकी दीवार से सटा कर नाली निर्माण कर रहे थे।मना करने पर मारे पीटे जाति सूचक गालियां भी दी। विमला देवी का आरोप है कि उसकी बेटी रेखा देवी बीच बचाव में आयी तो विपक्षी उसका गला दबा कर मार डालने की कोशिश किए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने नाली को भटवा दिया। पुलिस के जाने के बाद फिर जाति सूचक गालियां देते हुए जान से मार डालने की धमकी दी गई।शिमला देवी का आरोप है कि उसका मुकदमा न लिखा जाने पर वह पुलिस आयुक्त के यहां फरियाद लगाई। पुलिस आयुक्त के आदेश पर मऊआइमा पुलिस ने अमर सिंह और सौरभ कुमार के खिलाफ एससी एसटी एक्ट में तथा जान से मारने का प्रयास में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है।

युवक पर हमले में तीन पर रिपोर्ट दर्ज

झूंसी। थाना क्षेत्र के लीलापुर मार्ग के निकट चार दिन पूर्व एक युवक पर कुछ दबंगो ने हमला कर दिया। इस दौरान दबंगो ने उसे जम कर मारा, जिसमे वह लहुलहान हो गया। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने तीन लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। नारायनदास पूरा निवासी राज द्विवेदी 22 मई की शाम लीलापुर रोड स्थित आटा चक्की पर गया था। इसी दौरान रास्ते में बऊ यादव, पंचू यादव व संदीप यादव उसे रोक कर गली गलौज करने लगे। विरोध करने पर लाठी-डंडे से मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। किसी तरह भागकर उसने जान बचाई। पुलिस ने तीन के खिलाफ मामला दर्ज कर घायल का मेडिकल कराया।

अहिल्याबाई होल्कर त्याग और न्याय की प्रतिमूर्ति : निर्मला पासवान

अखंड भारत संदेश

महिला सशक्तिकरण सम्मेलन समारोह को संबांधित करतीं निर्मला पासवान

जंघई। भारतीय जनता पार्टी गंगापार के तत्वावधान में गुरुवार को ब्लाक सभागार प्रतापपुर में पुण्य श्लोक लोक माता देवी अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी स्मृति अभियान के तहत महिला सशक्तिकरण सम्मेलन समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष गंगापार निर्मला पासवान ने कहा कि बालिका शिक्षा और महिला उत्थान के लिए अहिल्याबाई प्रेरणा हैं इसी से प्रभावित होकर नारी शक्ति अधिनियम का कानून लाया गया जिससे भारत की मातृशक्ति को संविधान प्रदत्त शक्ति मिल सके। अहिल्याबाई होल्कर त्याग और न्याय की प्रतिमूर्ति थीं उनका जीवन शौर्य, साधना, सेवा, समर्पण, संयम और सादगी का अप्रतिम उदाहरण है। कार्यक्रम संयोजक ब्लाक प्रमुख प्रतापपुर शैलेश यादव ने कहा कि राजमाता अहिल्याबाई होल्कर एक अद्वितीय व्यक्तित्व की धनी महिला थीं उनकी न्यायप्रियता, प्रशासनिक क्षमता और धार्मिक सहिष्णुता ने उन्हें एक आदर्श शासक बनाया। जिला उपाध्यक्ष श्याम बिहारी पांडेय, जिला महामंत्री हरिभूषण सिंह, चेयरमैन केंद्रीय उपभोक्ता भंडार प्रयागराज, भाजपा नेता संजय बनकटा आदि ने भी अहिल्याबाई होल्कर के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष प्रदीप बिंद, संचालन मनोज सिंह आचार्य ने किया। इस अवसर पर सभाजीत मिश्र, अरविंद विश्वकर्मा, राजा मौर्य सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

मौखिक परीक्षा शोध पत्र या अन्य शैक्षणिक गतिविधियों का मूल्यांकन : डॉ अमित पांडेय

नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में मौखिक परीक्षा का आयोजन

अखंड भारत संदेश

नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में आयोजित मौखिक परीक्षा में शामिल हाने वाले छात्र-छात्राएं

जंघई। नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में गुरुवार को एमए द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर राजनीति विज्ञान की मौखिक परीक्षा विभागाध्यक्ष डॉ अमित पांडेय के निर्देशन में संपन्न हुई। इस अवसर पर डॉ अमित पांडेय ने कहा कि मौखिक परीक्षा वाइवा एक प्रकार की परीक्षा है जिसमें छात्र को पैनल के सामने मौखिक रूप से अपने ज्ञान, समझ और कौशल का प्रदर्शन करना होता है। यह आमतौर पर परियोजना कार्य, शोध पत्र या अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के मूल्यांकन का एक हिस्सा होता है। छात्र को अपने शोध के बारे में जानकारी प्रदान करनी चाहिए, जैसे कि शीर्षक, उद्देश्य, और शोध की प्रमुख बातें। छात्र को पैनल द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए प्रश्न आमतौर पर शोध के विषय से संबंधित होते हैं, लेकिन वे छात्र की समझ और ज्ञान का आकलन करने के लिए भी होते हैं। छात्र और पैनल के बीच शोध के बारे में चर्चा हो सकती है यह छात्र को अपने शोध पर अधिक जानकारी प्रदान करने या पैनल के प्रश्नों को स्पष्ट करने का अवसर देता है। छात्र को अपने शोध के बारे में अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करने चाहिए। एमए राजनीति की मौखिक परीक्षा छात्र की समझ और ज्ञान का आकलन करने का एक अच्छा तरीका है। यह परीक्षा छात्र को मौखिक रूप से अपने विचारों को व्यक्त करने और दूसरों के साथ बातचीत करने के कौशल का विकास करने में मदद करती है। यह परीक्षा छात्र को अपने ज्ञान और कौशल के बारे में आत्मविश्वास विकसित करने में मदद करती है।

प्रवेश परीक्षा में जेनिथ के बच्चों की बाजी

अश्विक शुक्ला

श्वेता सरोज

मांडा। क्षेत्र के दिघिया गांव स्थित जेनिथ चिल्ड्रेन एकेडमी के छात्रों ने हर साल अपनी काबिलियत से विद्यालय के स्तर को बनाए रखा है। श्वेता सरोज और अश्विक शुक्ला ने सैनिक स्कूल की प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त कर विद्यालय का सम्मान बढ़ाया है। विद्यालय के प्रबंधक राकेश उपाध्याय ने बताया कि पिछले वर्ष भी पांच छात्रों ने इसी परीक्षा में सफलता अर्जित की थी। विद्यालय के बच्चे नासा की ओर से आयोजित प्रतियोगिता में कई देशों के छात्रों को पीछे छोड़ते हुए सफलता अर्जित कर चुके हैं।यह भी बताया कि पिछले 19 वर्षों से विद्यालय अभिभावकों के भरोसे पर खरा उतर रहा है। छात्रों के परीक्षा उत्तीर्ण करने पर क्षेत्रीय लोगों ने खुशी जताई है।

ट्रेन से कटकर महिला की मौत

अखंड भारत संदेश

अज्ञात महिला का शव

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के बिझवनिया रेलवे ट्रैक पर ट्रेन से कट कर महिला ने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने महिला के शव का शिनाख्त करने का काफी प्रयास किया लेकिन अभी तक शिनाख्त नहीं हो सका। बिझवानिया रेलवे ट्रैक पर एक महिला ने ट्रेन से कट कर आत्महत्या कर ली। कारण स्पष्ट भी नहीं है और महिला का शिनाख्त भी नहीं हो सका। स्थानी लोगों ने बताया कि वह दिन में कई बार प्रयास किया लेकिन आसपास के लोगों ने उसे बचा लिया। वह झाड़ियों में छिपी थी अचानक प्रयागराज की ओर जा रही ट्रेन के आगे कूद कर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने महिला का शिनाख्त करने का काफी प्रयास किया लेकिन अभी तक पहचान नहीं हो सकी। महिला नीले रंग की साड़ी पहनी हुई है तथा दोनों हाथों में लाल रंग की चूड़ियां पहन रखी है। दोनों पैर में पायल भी पहना हुआ है। पुलिस हर संभव महिला के शिनाख्त के लिए प्रयास जारी है। पुलिस द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से पहचान करने में जुटी हुई है। पंचनामा कर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

भारत रत्न किसान मसीहा पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह की 38वीं पुण्य तिथि मनाई गई

अखंड भारत संदेश

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 38वीं पुण्यतिथि पर लोगों को संबोधित करते राम कृष्ण सिंह पटेल

जारी। राष्ट्रीय लोक दल के तत्वाधान में गुरुवार को पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 38वीं पुण्यतिथि जारी बाजार के डाक बांग्ला में मनाई गई। कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं ने स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह के मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी। कार्यकताओं ने चौधरी चरण सिंह को याद करते हुए उनके बताए रास्ते और सिद्धांतों पर चलने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय लोकदल किसान प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष व राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य राम कृष्ण सिंह पटेल ने कहा कि चौधरी साहब ने किसानों और पिछड़ों को राजनीति का पाठ पढ़ाया। स्वः साहब जीवन पर्यंत किसान हितों के लिए संघर्षरत रहे। जब भी उन्हें मौका मिला किसानों के हित में कार्य किया। जमीदारी उन्मूलन कानून के जरिए किसानों की जमीन का मालिक बनाया, पटवारियों द्वारा किसानों का शोषण किया जाता था. पटवारियों द्वारा हड़ताल करने पर 28000 पटवारियों को समाप्त कर लेखपाल की भर्ती की। चकबन्दी मण्डी समिति कानून, भूमि संरक्षण, यू०पी० एग्रो का गठन चौधरी चरण सिंह जी ने किया। किसानों को खेती के लिए ऋण व अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराया ग्रामीण भारत के विकास के लिए उन्होंने ग्रामीण विकास मंत्रालय की स्थापना की जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों का विकास सम्भव हुआ।

गोष्ठी को सम्बोधित करने वाले अन्य प्रमुख लोगों में श्री नर्वदा सिंह, रवीन्द्र कुमार सिंह, रणजीत सिंह, अभयराज सिंह, मान सिंह, रमाकान्त विश्वकर्मा, लाल बहादुर बिन्द, रमेश बिन्द, धर्नधर तिवारी, राम सिंह, विमल सिंह, राजेश सिंह, घनश्याम प्रजापति, धन्द्रशेखर मौर्य, अजीत कुशवाहा, राजेन्द्र पाल, लालमन पाल, अवधेश सिंह, गुलाब सिंह, शिव नरेश सिंह, प्रभाकर सिंह आदि थे। गोष्ठी में बड़ी संख्या में रालोद कार्यकर्ता व क्षेत्रीय किसान उपस्थित थे।

निकाली गई भव्य कलश यात्रा, श्रोताओं ने श्रवण किया कथा महात्म्य

सहसों। मथुरा उर्फ पारंडीह गांव स्थित श्री रमेश चंद्र शुक्ल एवं श्रीमती ज्ञान्ती शुक्ला के संयोजन में आयोजित सप्त दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत महापुराण कथा ज्ञान यज्ञ के पूर्व गुरुवार को कथा व्यास आचार्य कृष्ण देव जी महाराज की अगवाई में भव्य कलश यात्रा निकल गई। कलश यात्रा को कथा स्थल से प्रारंभ कर गांव के गली मुहल्लों में भ्रमण कराते हुए वापस कथा स्थल पर विराम दिया गया। कलश यात्रा के दौरान भारी संख्या में शामिल भक्त महिलाएं सिर पर कलश लिए आधुनिक वाद्य यंत्रों द्वारा भक्ति ध्वनि के साथ मंगल गीत गाते एवं पुरुष भक्त हर हर महादेव व भगवान का जयकारा लगाते साथ-साथ चल रहे थे। कलश यात्रा के पश्चात कथा व्यास द्वारा व्यास पीठ से भक्त श्रोताओं को भागवत महात्म्य एवं परीक्षित जन्म की रोचक प्रसंग का श्रवण कराते हुए बताया कि मनुष्य को भगवत कथा श्रवण मात्र से ही जन्म जन्मांतर के समस्त पापों का हरण होकर इस सांसारिक भवसागर से पार होने के लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। कथा के उपरांत मुख्य यजमान सहित अन्य श्रोता भक्तों ने भागवत भगवान, व्यास पीठ एवं आवाहित देवी देवताओं की आरती उतारी। तत्पश्चात भक्तों में प्रसाद का वितरण हुआ। इस अवसर पर प्रमुख रूप से भगवत प्रसाद शुक्ल, शालिक राम शुक्ल, कमला शंकर शुक्ल, प्रकाश चंद्र शुक्ल, प्रमोद शुक्ल, लवकेश मिश्र, विजय तिवारी एवं प्रवेश शुक्ल सहित काफी संख्या में ग्रामीण भक्त नर नारी कथा का रसपान करते उपस्थित रहे।

भू-माफियाओं की 33 बीघा अवैध प्लाटिंग ध्वस्त

तीन घंटे तक गरजता रहा बुलडोजर, 33 बीघा से अधिक अवैध प्लॉटिंग ध्वस्त

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शहर के अलग-अलग हिस्सों में अवैध प्लाटिंग करके भू माफिया मालामाल हो रहे हैं। पीडीए से लेआउट पास कराए बिना खरीदारों को गुमराह करके मनमाने तरीके से भूखंडों की बिक्री कर रहे हैं। ऐसे भू माफिया के खिलाफ पीडीए की ओर लगातार कार्रवाई की जा रही है। गुरुवार को जोनल अधिकारी विनय द्विवेदी की अगुवाई में 33 बीघा से अधिक क्षेत्रफल में की गई अवैध प्लाटिंग को बुलडोजर से ढहाया गया।

मीरापुर में अमन सकूजा,आमिर हम्जा, मो. अहमद, अफाहिम की ओर से आराजी संख्या-494, आराजी संख्या-491, आराजी संख्या-495 अन्य स्थानों पर 25 बीघा से अधिक में अवैध प्लाटिंग कर भूखंडों की बिक्री की जा रही थी।

सूचना पर पीडीए की टीम गुरुवार को तीन घंटे से अधिक समय में

अवैध प्लाटिंग ध्वस्त करता जेसीबी

भूखंडों पर बनी बाउंड्री को ध्वस्त कर दिया। झलवा की ओर भीटी क्षेत्र में ग्रीनवैली के पीछे जेपी दुबे व अन्य आठ बीघा में की गई अवैध प्लाटिंग को ध्वस्त किया गया।

ध्वस्तीकरण के दौरान कई लोगों ने विरोध करने का भी प्रयास किया लेकिन पुलिस बल मौजूद होने के कारण किसी तरह का बवाल नहीं हुआ। जोनल अधिकारी विनय द्विवेदी ने बताया कि अवैध प्लाटिंग करने वालों के खिलाप लगातार कार्रवाई की जाएगी। ध्वस्तीकरण के बाद दोबारा प्लाटिंग करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी।

अवैध कब्जा हटाकर मुक्त कराई जमीन

पीडीए की कालिंदीपुरम आवासीय योजना के भूखंडों पर अवैध कब्जा करने वाले एचलाल, लालजी मिश्रा व आशिफ ठेकेदार के खिलाफ कार्रवाई की गई। अलग-अलग भूखंडों पर बनाई गई दीवार को बुलडोजर से तोड़कर उसे कब्जा मुक्त कराया गया। अनुमान लगाया जा रहा है कि 40 लाख से अधिक जमीन पर अवैध कब्जा करके भवन तैयार करने का प्रयास किया जा रहा था।

भारत रत्न किसान मसीहा पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह की 38वीं पुण्य तिथि मनाई गई

प्रयागराज। राष्ट्रीय लोक दल के तत्वाधान में गुरुवार को पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 38वीं जारी बाजार के डाक बांग्ला में मनाई गई। कार्यक्रम में कार्यकताओं ने स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह के मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी। कार्यकताओं ने चौधरी चरण सिंह को याद करते हुए उनके बताए रास्ते और सिद्धांतों पर चलने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय लोकदल किसान प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष व राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य राम कृष्ण सिंह पटेल ने कहा कि चौधरी साहब ने किसानों और पिछड़ों को राजनीति का पाठ पढ़ाया। स्वः साहब जीवन पर्यंत किसान हितों के लिए संघर्षरत रहे। जब भी उन्हें मौका

मिला किसानों के हित में कार्य किया। जमीदारी उन्मूलन कानून के जरिए किसानों की जमीन का मालिक बनाया, पटवारियों द्वारा किसानों का शोषण किया जाता था. पटवारियों द्वारा हड़ताल करने पर 28000 पटवारियों को समाप्त कर लेखपाल की भर्ती की। चकबन्दी मण्डी समिति कानून, भूमि संरक्षण, यू०पी० एग्रो का गठन चौधरी चरण सिंह जी ने किया। किसानों को खेती के लिए ऋण व अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराया ग्रामीण भारत के विकास के लिए उन्होंने ग्रामीण विकास मंत्रालय की स्थापना की जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों का विकास सम्भव हुआ।

गोष्ठी को सम्बोधित करने वाले अन्य प्रमुख लोगों में श्री नर्वदा सिंह, रवीन्द्र कुमार सिंह, रणजीत सिंह, अभयराज सिंह, मान सिंह, रमाकान्त विश्वकर्मा, लाल बहादुर बिन्द, रमेश बिन्द, धर्नधर तिवारी, राम सिंह, विमल सिंह, राजेश सिंह, घनश्याम प्रजापति, धन्द्रशेखर मौर्य, अजीत कुशवाहा, राजेन्द्र पाल, लालमन पाल, अवधेश सिंह, गुलाब सिंह, शिव नरेश सिंह, प्रभाकर सिंह आदि थे। गोष्ठी में बड़ी संख्या में रालोद कार्यकर्ता व क्षेत्रीय किसान उपस्थित थे।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जीएसटी जुर्माने को बताया अवैध

- कहा- सिर्फ तकनीकी चूक पर दंड नहीं दे सकते
- जीएसटी जुर्माने में केवल तकनीकी चूक पर दंड नहीं दे सकते : हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने जीएसटी कानून की धारा 129(3) के अंतर्गत लगाए गए जुमार्ने को अवैध करार देते हुए कहा है कि यदि कर चोरी का इरादा नहीं है तो केवल तकनीकी चूक पर दंड नहीं दिया जा सकता। यह आदेश मुख्य न्यायाधीश अरुण भंसाली तथा न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेंद्र की खंडपीठ ने मेसर्स आटो इंडस्ट्रीज की याचिका पर दिया है।

याची पर गौतमबुद्ध नगर के सहायक आयुक्त (मोबाइल स्क्वाड-5) ने ई-वे बिल का पार्ट-बी न भरने पर जुमार्ना लगाया था। इसके खिलाफ कंपनी ने हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था।

याची के अधिवक्ता प्रांजल शुक्ला ने दलील दी कि माल वैध रूप से ले जाया जा रहा था और यह केवल तकनीकी त्रुटि थी। वहीं सरकारी अधिवक्ता ने इसे गंभीर चूक बताया। कोर्ट ने पाया कि आदेश में कर चोरी का कोई उल्लेख नहीं था और सुप्रीम कोर्ट के एक पूर्व निर्णय के आधार पर जुमार्ना रद कर दिया।

सामाजिक न्याय के लिए लड़ती थी अहिल्या बाई होल्कर : अशोक सिंह

प्रमुख प्रतिनिधि ने आंगनबाड़ी के साथ-साथ समूह के महिलाओं का बढ़ाया हौसला

अखण्ड भारत सन्देश

मांडा। अहिल्याबाई होल्कर का जीवन सामाजिक न्याय और नारी सशक्तिकरण का उदाहरण है। उनके शासनकाल में जनकल्याण के अनेक कार्य हुए। धर्म, संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अनुकरणीय रहा है। उक्त बातें गुरुवार को ब्लॉक सभागार में आयोजित अहिल्या बाई होल्कर के जयन्ती मे उपस्थित मुख्य अतिथि कोरांव विधायक राजमणि कोल ने कहीं। वहीं पूर्व ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि अशोक सिंह ने कार्यक्रम में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों और आशा बहुओ के साथ साथ समूह के महिलाओ की हौशला अफजाई करते हुए कहा की इस तेज धूप मे भी जिस तरह से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई है काफी काबिले तारीफ है शायद

कार्यक्रम में उपस्थित आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को संबोधित करते मुख्य अतिथि कोरांव विधायक राजमणि कोल

यही वजह रही होगी की माता अहिल्याबाई होल्कर धूप छाव नहीं देखती थी।निरंतर सामाजिक न्याय के लिए लड़ती रही कार्यक्रम के दौरान प्रमुख प्रतिनिधि ने अन्न प्रासन के साथ समूह के महिलाओ को अच्छे कार्य के लिए प्रमाण पत्र वितरित किया गया।

तथा कार्यक्रम में भाजपा मंडल अध्यक्ष लीलावती गुप्ता ने बताया कि अहिल्या बाई होल्कर को एक वीरांगना और शासक के साथ- साथ धार्मिक एवं सामाजिक सुधार में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किया जाता है। उन्होंने पूरे भारतवर्ष में घूम-घूमकर धार्मिक एवं समाज सुधार के अनगिनत कार्यों को पूरा किया। वही कार्यक्रम की अध्यक्षता वीडीओ मांडा अमित मिश्रा ने प्रमुख प्रतिनिधि अशोक सिंह को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किये। अहिल्या बाई होल्कर की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके उनके जीवनी पर प्रकाश डाला। मौके पर सीडीपीओ मांडा रमेश कुमार,मुख्य वक्ता संतरा निषाद बिन्द, राम कली बाल विकास योजना अधिकारी, दिघिया मंडल अध्यक्ष सुब्बालाल प्रजापति, मांडवी शरण द्विवेदी,राजमणि द्विवेदी, मंडल महामंत्री रामबली मौर्य, ज्ञान नरायण कन्नोजिया, बृजेन्द् शुक्ला, सुजीत केशरी, एडीओ पंचायत रमाकांत, बीएमम विवेक तिवारी सहित आदि लोग मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना रोजगार हेतु सार्थक पहल : अशोक

अखंड भारत संदेश

करछना। युवाओं को प्रशिक्षित कर रोजगार का अवसर देने और उनके आर्थिक विकास से जोड़ने को लेकर प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना एक सराहनीय पहल है।युवाओं को चाहिए कि अपने मन मुताबिक विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण लेकर अपने मन चाहे रोजगार के अवसर का लाभ लें। यह बातें क्षेत्र के सोनाई स्थित सावित्री देवी महाविद्यालय के सभागार में गुरुवार को, बीते 6 माह से प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को किट एवं प्रमाण पत्र वितरण समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ हास्य कवि अशोक सिंह बेशरम ने कही। दीप प्रज्वलन के उपरांत कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्रबंधक ज्ञान सिंह पटेल ने कहा कि यह प्रधानमंत्री की बड़ी सार्थक सोच है।जिसमें,युवाओं के लिए आज स्वर्णिम अवसर है। हमारे युवा छात्र, छात्राएं प्रशिक्षण लेकर आय

छात्र-छात्राओं को किट एवं प्रमाण पत्र वितरित करते मुख्य अतिथि अशोक सिंह बेशरम

के स्रोत बना सकते हैं। युवाओं को सिखाई गई बातों को पूरी तरह से अमल मे लाने और इसके प्रयोग हेतु प्रेरित करते हुए संयोजक एवं प्राचार्य डॉ.समीर श्रीवास्तव ने सभी के प्रति शुभकामना एवं अतिथियों का आभार प्रकट किया। संचालन अंशुमान प्रजापति ने किया। इस मौके पर रामललक सिंह, आर.के. श्रीवास्तव, सेजल चौरसिया, चंद्रशेखर सिंह महेंद्र कुशवाहा, सुरेंद्र सिंह समेत कई लोग एवं बड़ी संख्या में प्रशिक्षार्थी मौजूद रहे।

प्रेमी को वीडियो काल करते हुए फंदे पर लटक गई युवती

अखंड भारत संदेश

- युवती ने वीडियो कॉल पर लगाई फांसी
- प्रेमी ने पुलिस को दी सूचना
- धूमनगंज में हुई घटना

प्रयागराज। प्रेमी से वीडियो काल पर बात करते हुए एक युवती फंदे पर लटक गई। प्रेमी की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। युवती को फंदे से उतारा तो उसकी मौत हो चुकी थी। कमरे से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। धूमनगंज पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बताया गया है कि धूमनगंज थाना क्षेत्र के कसारी-मसारी जीटीबी नगर में मो. फैज का मकान है। उसके मकान में किराए पर कमरा लेकर 25 वर्षीय शहनाज पुत्री मो. बन्ने रहती थी। वह एक दुकान पर काम करती थी। बुधवार रात वह अपने कमरे में थी। इसी बीच उसने अपने प्रेमी को वीडियो काल किया।

दोनों के बीच काफी देर तक बातचीत होती रही। तभी अचानक शहनाज ने फंदा बनाया और उसी पर लटक गई। इस पर प्रेमी घबरा गया। उसने कई बार काल किया, लेकिन रिसीव नहीं हुआ। तब उसने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस दरवाजा तोड़कर भीतर दाखिल हुई तो युवती फंदे पर लटक रही थी। युवती की मौत होने पर पुलिस ने मकान मालिक से पूछताछ की। कालर से बातचीत पर घटना का पता चला। चौकी इंचार्ज राजरूपपुर शैलेंद्र कुमार का कहना है कि युवती ने फंदे पर लटककर जान दी है। मोबाइल को कब्जे में लेकर जांच की जा रही है।

कथा कहते कथा व्यास आचार्य बालकृष्ण शास्त्री महाराज

सुदामा चरित्र वर्णन के साथ महराजपुर डड़ियां की कथा संपन्न

अखंड भारत संदेश

जंघई। महराजपुर डड़ियां, बौरी बोझ गांव में मुख्य यजमान जटाशंकर पांडेय के निवास पर आयोजित श्रीमद्भागवत महापुराण कथा सप्ताह के प्रथम दिवस कलश यात्रा, मंडप प्रवेश, देव पूजन एवं भागवत महात्म्य प्रसंग को कथा व्यास आचार्य बालकृष्ण शास्त्री महाराज ने सुनाया। महाराज ने जीवन में सत्संग व शास्त्रों में बताए आदर्शों का श्रवण करने का आह्वान करते हुए कहा कि सत्संग में वह शक्ति है, जो व्यक्ति के जीवन को बदल देती है। उन्होंने कहा कि व्यक्तियों को अपने जीवन में क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा आदि का त्याग करके विवेक के साथ श्रेष्ठ कर्म करना चाहिए। भागवत कथा के दूसरे दिन महाराज ने परीक्षित जन्म, शुकदेव आगमन, तीसरे दिन कर्दम देवहूति संवाद, सती चरित्र, ध्रुव चरित्र जड़ भरत संवाद प्रसंगों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भगवान नाम मात्र से ही व्यक्ति भवसागर से पार उतर जाता है। चतुर्थ दिवस श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, पांचवें दिन श्रीकृष्ण बाल लीला, गोवर्धन पूजा, छठवें दिन श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह का वर्णन किया। श्रीमद्भागवत कथा सुदामा चरित्र वर्णन एवं परीक्षित मोक्ष के साथ कथा संपन्न हुई कथा के पश्चात पूणार्हुति हवन, महाप्रसाद का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कमलेश पांडेय, राजेंद्र प्रसाद पांडेय झल्लू, पंकज पांडेय, डिंपल शुक्ला, नीरज पांडेय, सुशील कुमार पांडेय, सोनल, कोमल, शुभम, छोटू, अंश, प्रिंस, सम्यक, शांतनु, मानस, पार्थ सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

राजमाता अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी स्मृति अभियान : प्रधानमंत्री मोदी ने देश को गौरवगान का अवसर दिया : विभवनाथ भारती

- अहिल्याबाई जैसी कुशल शासिका न पहले थीं, न होंगी": अर्चना शुक्ला
- नगरपंचायत प्रतिनिधि सम्मेलन शंकरगढ़ में सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। नगरपंचायत शंकरगढ़ परिसर में वृहस्पतिवार सायंकाल राजमाता अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी स्मृति अभियान के अंतर्गत नगरपंचायत प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती ने कहा, धर्मो रक्षति रक्षितःको चरितार्थ करने

कार्यक्रम में स्वच्छाग्रहियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती व उपस्थित लोग

वाली पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर को मैं सादर नमन करता हूँ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके कृतित्व का स्मरण कर देश को गौरवगान का एक अनमोल अवसर दिया है। विभवनाथ भारती ने कहा कि अहिल्याबाई का सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा, सुशासन, सामाजिक न्याय, धार्मिक संरक्षण और महिला सशक्तिकरण का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने कन्याकुमारी से कश्मीर तक आक्रांताओं द्वारा ध्वस्त किए गए हजारों मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया, जल संरक्षण के लिए तालाब-बावड़ियाँ बनवाईं, तथा शिक्षा और न्याय के मार्ग को प्रशस्त किया। आज, उनके 300 वर्ष बाद भी उनका जीवन प्रेरणास्रोत बना हुआ है। मुख्य वक्ता महिला मोर्चा काशी क्षेत्र की उपाध्यक्ष अर्चना शुक्ला ने कहा,अहिल्याबाई होल्कर जैसी कुशल शासिका न पहले कभी मिलीं, न भविष्य में मिलेंगी। उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी सत्य, धर्म और न्याय से विचलित हुए बिना प्रजा की सेवा को अपना परम कर्तव्य माना।

कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष अखिलेश सिंह पटेल ने की, जबकि संचालन आईटी जिला प्रमुख यमुनापार सतीश विश्वकर्मा ने किया। स्वागत संबोधन कार्यक्रम संयोजक व अल्पसंख्यक मोर्चा के जिलाध्यक्ष कुशल जैन ने प्रस्तुत किया।इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला मंत्री शिवराम सिंह परिहार, जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुवेर्दी, नगरपंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि छेदीलाल कोटार्य, उमा वर्मा, मंसुरिया दीन वर्मा, रत्नाकर त्रिपाठी, कमलेश आदिवासी, सुमित त्रिपाठी, मुन्ना मिश्रा, डॉ. सत्य रंजन समंदर, रामजतन बंसल, अरुण सिंह, युवराज सिंह सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में स्वच्छता ग्राहियों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया तथा मंचासीन अतिथियों ने उन्हें शुभकामनाएं दीं।

फूलपुर में 30 मई से 1 जून तक बिजली आपूर्ति बाधित रहेगी

तीन दिनों तक आठ आठ घंटे ठप रहेगी विद्युत आपूर्ति

प्रयागराज। 33/ 11 के वी विद्युत उप केंद्र फूलपुर ग्रामीण से निर्गत 11 के वी भूपत पुर फीडर, मैलहन फीडर एवं प्रतापपुर फीडर के अंतर्गत आर डी एस एस योजना अंतर्गत जर्जर विद्युत तारों एवं पोलों को बदलने हेतु विद्युत आपूर्ति आज 30 मई से लेकर आगामी 1 जून तक प्रातः काल आठ बजे से शाम चार बजे तक प्रतिदिन आठ आठ घंटे विद्युत आपूर्ति ठप रहेगी। यह जानकारी देते हुए उपखंड अधिकारी विद्युत वितरण उपकेंद्र फूलपुर इंजी अमन सिंह ने प्रभावित क्षेत्र के उपभोक्ताओं से सहयोग करने का आवाहन किया है।

गोआश्रय केन्द्र के निरीक्षण में मिली खामियां

पंचायत सचिव पर निलंबन की गाज, लालगंज बीडीओ व रामपुर संग्रामगढ़ के बीईओ को भी मिली प्रतिकूल प्रवृष्टि

अखंड भारत संदेश

गौआश्रय केन्द्र का निरीक्षण करते जिलाधिकारी

प्रतापगढ़। डीएम के गुरूवार को अचानक लालगंज ब्लाक के पहाड़पुर स्थित गोअभ्यारण केंद्र के निरीक्षण में कदम कदम पर मिली बेतरतीव व्यवस्था से अफसरो का गला सूखता नजर आया। गोअभ्यारण स्थल के निरीक्षण में मवेशियों की चरही में हरे चारे की जगह मात्र भूसा देखकर डीएम भड़क उठे। वहीं गोवंशों को दुबला पतला देखने पर भी जिलाधिकारी नाराज हो उठे। डीएम ने गोवंश के संदर्भ में अभिलेख में समुचित जानकारी न देख सम्बन्धित ग्राम प्रधान व पंचायत सचिव के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिये। नोडल अधिकारी रामपुर संग्रामगढ़ के खण्ड शिक्षा अधिकारी रविशंकर द्वारा गोवंश के निरीक्षण में लीपापोती देखकर डीएम ने इन्हें प्रतिकूल प्रवृष्टि दिये जाने के निर्देश दिये। लालगंज खण्ड विकास अधिकारी पर भी शिथिल पर्यवेक्षण को लेकर प्रतिकूल प्रवृष्टि की गाज गिरी। गोवंशो की संख्या मिलान में अनियमितता पाये जाने पर डीएम ने वित्तीय अनियमितता के तहत पंचायत सचिव पर भी निलंबन की गाज गिरा दी। वहीं डीएम ने मोती का पुरवा गांव में भ्रमण कर सरकारी योजनाओं की भी हकीकत खंगाली ग्रामीणों से सीधे संवाद कर योजनाओं के संचालन की भी डीएम नब्ज टटोलते दिखे। डीएम ने गोआश्रय स्थल पर अव्यवस्थाओ को लेकर मुख्य पशु चिकित्साधिकारी समेत लालगंज के खण्ड विकास अधिकारी को भी जमकर फटकार लगायी। डीएम की फटकार पर अफसर गोअभ्यारण केंद्र में नजरें चुराते देखे गये। जिलाधिकारी शिवसहाय अवस्थी अचानक पहाड़पुर गोअभ्यारण केंद्र पहुंच गये। औचक निरीक्षण में मवेशी के कान में टैग न देख डीएम का पारा तल्ख दोपहरी में चढ़ आया। नाराज जिलाधिकारी ने मुख्य पशु चिकित्साधिकारी का स्पष्टीकरण तलब किये जाने के निर्देश दिये। वहीं आश्रय स्थल पर मवेशियों के खान पान तथा चिकित्सा व रहन सहन को लेकर जिलाधिकारी की नजर खामियों पर आ टिकी। नाराज डीएम ने इन अव्यवस्थाओं को लेकर खण्ड विकास अधिकारी की लापरवाही पर उन्हें भी फटकार लगायी। बीडीओ मानवेंद्र शर्मा डीएम को स्पष्टीकरण देने के फिराक में दिखे लेकिन डीएम की तनी भृकुटी देख बीडीओ की सिटटी पिटटी गुम हो उठी दिखी। डीएम ने पहाड़पुर ग्राम पंचायत का भी भ्रमण कर निर्माण कार्यो का भी अवलोकन किया। गांव में जगह जगह गंदगी का आलम भी डीएम को नागवार गुजरा। डीएम ने भ्रमण के दौरान ग्रामीणों से सीधा संवाद कर विकास कार्यो की हकीकत की भी नब्ज टटोली। जिलाधिकारी ने ग्रामीणों को केन्द्रीय एवं प्रदेश सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को लेकर जागरूकता भी प्रदान की। घंटो डीएम के पहाड़पुर में होने की खबर से आसपास की ग्राम पंचायतों व विभिन्न सरकारी कार्यालयों में भी बेचैनी का माहौल देखा गया। डीएम ने मातहतों को शासन की मंशा के अनुरूप गोआश्रय के सुव्यवस्थित संचालन को लेकर कड़वी नसीहतें दी। वहीं उन्होने विकास कार्यो में पारदर्शिता व गुणवत्ता हर हाल में बनाए रखने को कहा। डीएम ने मातहतों को आगाह किया कि उनके निरीक्षण में दिखी खामियों को समयबद्ध दूर न किया गया तो अफसरों के यहां रेण्डम चेकिंग की रिपोर्ट के आधार पर लापरवाह के खिलाफ कठोर कार्रवाई सुनिश्चित होगी। इस मौके पर पशु चिकित्साधिकारी डा0 नरोत्तम सिंह, पंचायत सचिव अविनाश व प्रधान शीला शुक्ला तथा बीडीओ मानवेन्द्र शर्मा भी मौजूद रहे।

पैथालाजी संचालक ने रंगदारी मांगने का लगाया आरोप

पट्टी। कोतवाली के एक पैथालाजी संचालक ने रंगदारी मागने का आरोप लगाते हुए पुलिस से शिकायत की है। सुमतपुर गांव निवासी रत्नेश पाण्डेय पुत्र रमेश पाण्डेय ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपित किया है कि वह उडैयाडीह बाजार में एक पैथालाजी चलाता है। गुरुवार की सुबह लगभग 8 बजे किसी काम से जा रहा था। जब वह उडैयाडीह बाईपास से रानीगंज की तरफ मुडा तभी एक व्यक्ति ने अपने तीन-चार अन्य साथियों के साथ उसे रोक लिया। उसके साथ गाली गलौज करते हुए कहा कि यदि दुकान चलानी है तो प्रतिमाह रुपये देना होगा नही तो प्रतिदिन तुम्हारी पिटाई करुगा। युवक ने आरोपित किया है कि एक दिन पहले 28 मई 2025 को पट्टी-रानीगंज मार्ग पर पूरेसुजात गांव के पास उसकी पिटाई की थी। जिसकी शिकायत उसने दिलीपपुर थाने पर की थी। युवक ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर उक्त युवकों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। इस संबंध में पट्टी कोतवाल आदित्य सिंह ने बताया कि मामला रुपये के लेनदेन का हैं। रंगदारी जैसी कोई बात नही है। मामले में युवक द्वारा दिलीपपुर थाने पर शिकायत की है। जांच कराकर उचित कार्रवाई की जायेगी।

न्यूज झरोखा

धर्म का पालन करने पर पुण्य में हुआ करती है वृद्धि : दण्डी स्वामी विनोदानंद

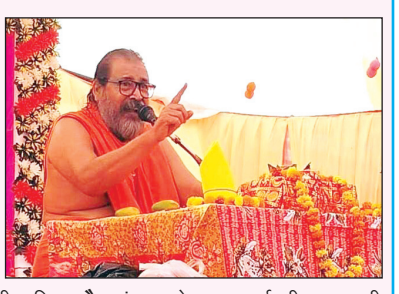

प्रतापगढ़। क्षेत्र के नारायणपुर गांव में हो रही संगीतमयी श्रीमदभागवत कथा में गुरूवार को श्रद्धालु धर्म और कर्म के मर्म से जुडी कथा सुनकर मंत्रमुग्ध हो उठे। कथाव्यास प्रयागराज से पधारे दण्डीस्वामी विनोदानंद सरस्वती जी महराज ने कहा कि कर्म की सुचिता और संस्कार के साथ कर्म की साधना ही धर्म का पालन है। उन्होने बताया कि धर्म का पालन करने पर ही जीवन में पुण्य का अर्जन हुआ करता है। उन्होने कहा कि पुण्य को प्राप्त करने का एक मात्र साधन धर्म और सत्कर्म के साथ जीवन को आगे बढ़ाना है। दण्डी स्वामी विनोदानंद जी ने कहा कि जीवन में पुण्य के अनुपात में ही मनुष्य को सुख की अनुभूति हुआ करती है। उन्होने कहा कि धर्म से भटकाव के बाद उत्पन्न अनैतिकता जीवन में दुखों का कारक बन जाती है। उन्होने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण जी ने अपनी समस्त लीलाओं में संसार को नीति तथा सुचिता के मार्ग पर लक्ष्य प्राप्ति का मार्गदर्शन किया है। उन्होनें कहा कि यह व्यक्ति पर निर्भर है कि वह भगवान की कृपा को प्राप्त करने के लिए जीवन की साधना को कितना निर्मल बना सकता है। संयोजक पं. रूप नारायण मिश्र व महादेव मिश्र बम बम ने व्यासपीठ का पूजन अर्चन किया। वहीं कथा में भगवान द्वारिकाधीश की आराधना के भक्तिमय भजन संकीर्तन को सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हुये। इस मौके पर त्रिवेणी प्रसाद त्रिपाठी, जगदीश प्रसाद तिवारी, काशीनरेश शुक्ला, श्रीकांत शुक्ला, श्यामलाल फौजी, कविता मिश्रा, निर्मला मिश्रा, शशि देवी मिश्रा, सुरेश नारायण मिश्र, शिव नारायण मिश्र, तीर्थराज मिश्र आदि रहे।

तमंचे संग धराया आरोपी, गया जेल

लालगंज। एसपी डा0 अनिल कुमार के अपराध नियंत्रण अभियान को लेकर लालगंज पुलिस को दूसरे दिन भी सफलता हाथ लगी है। प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव के सख्त पर्यवेक्षण में चेकिंग अभियान के तहत कोतवाली पुलिस ने अवैध तमंचे व कारतूस के साथ एक आरोपी को हिरासत मे ले लिया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट का केस दर्ज कर उसे जेल भेज दिया। लालगंज कोतवाली के रानीगंज कैथौला चैकी इंचार्ज विवेक यादव गुरूवार की सुबह फोर्स के साथ गश्त पर निकले थे। चेकिंग के दौरान चैकी क्षेत्र के बछवल गांव में पुलिया के समीप एक आरोपी पुलिस टीम देख भागने लगा। पुलिस टीम ने दौड़ाकर आरोपी को दबोच लिया। तलाशी लेने पर पडोसी जिले रायबरेली के थाना नसीराबाद के पूरे मितई बभनपुर निवासी सूरज गुप्ता पुत्र लालता प्रसाद के पास से एक तमंचा व एक कारतूस बरामद हुआ। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट का केस दर्ज किया है। दोपहर बाद पुलिस ने आरोपी को जेल भेज दिया।

घरेलू कलह से तंग विवाहिता ने किया आत्महत्या का प्रयास

पट्टी। घरेलू कलह से तंग विवाहिता ने घर के भीतर साड़ी के फंदे से फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। परिजन इलाज के लिए सीएचसी लाए जहां पर चिकित्सक ने गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया। कंधई थाना क्षेत्र के धूती गांव निवासी चांदनी तिवारी (25) पत्नी सुधीर तिवारी ने घरेलू कलह से तंग आकर फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। परिजन उसे गंभीर हालत में इलाज के लिए सीएचसी पट्टी लेकर पहुंचे जहां पर चिकित्सक ने हालत गंभीर होने के चलते जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया।इमरजेंसी में तैनात चिकित्सक डॉ के सी प्रसाद ने बताया महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया है। महिला गर्भवती है। गंभीर हालत के चलते प्राथमिक उपचार कर जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया है।

सड़क सुरक्षा अभियान के तहत लोगों को किया गया जागरुक

लोगों को जागरूक करता जागरूकता वाहन

पट्टी। लोगों को सड़क सुरक्षा के लिए जागरुक करने के लिए विभाग द्वारा जागरूकता अभियान चलाया गया। इस दौरान जनपद के अलग-अलग बाजारों में एलईडी वैन से प्रचार व प्रसार किया गया।

एआरटीओ ड0 दिलीप कुमार गुप्ता के निर्देश पर पीजी कालेज पट्टी के सामने, तहसील के सामने, बीबीपुर चैराहे सहित अन्य जगहों पर सडक सुरक्षा के तहत जनपद के लोगों को जागरूक किया गया। वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करने, वाहन चालकों को नशे की हालत में गाड़ी नहीं चलाने, हमेशा वाहन चलाते समय हेलमेट व सीट बेल्ट का प्रयोग करने, वाहन निर्धारित गति एवं निर्धारित लेन में ही चलाने, हमेशा एंबुलेंस को तुरंत साइड देने तथा कभी भी गलत साइड से ओवरटेक नहीं करने आदि की जानकारी एलईडी वैन के माध्यम से दी गई। इस दौरान लोगों ने यातायात नियमों का पालन करने की विभिन्न जानकारियां एलईडी वैन से पाई।इस दौरान लोग एलईडी वैन के पास पहुंचकर यातायात के नियमों की जानकारी ले रहे थे।

इकलौते बेटे की मौत, परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल

मृतक की फाइल फोटो

बेलखरनाथ धाम। इकलौते बेटे की मौत की सूचना मिलने पर परिजनों में कोहराम मच गया। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के शेखपुरा अठगवा गांव निवासी बबलू यादव का इकलौता बेटा राहुल 23 हैदराबाद में किसी कंपनी में प्राइवेट कंपनी में काम करता था। अचानक उसकी तबीयत खराब हुई जहां उसकी मौत हो गई मौत हो गई। मौत की सूचना उसके दोस्त ने घर शेषपुर अठगवा में दी तो परिजनों में कोहराम मच गया। बता दें कि राहुल यादव कि 26 जून को तिलक था और नवम्बर में शादी। उसकी मौत की सूचना पर बाबा अनंत राम यादव पिता बबलू यादव और उसकी मां का रो रो कर बुरा हाल हो गया है।वह अपने मां बाप का इकलौता संतान था। इस घटना से गांव में मातम छा गया है।

अहिल्याबाई की स्मृति में महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम आयोजित

अखंड भारत संदेश

कार्यक्रम में उपस्थित लोग

बेलखरनाथ धाम। गुरुवार को बाबा बेलखरनाथ ब्लॉक सभागार में अहिल्याबाई की याद में महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें महिलाओं को सशक्तिकरण के उपाय बताए गए तथा उन्हें सम्मानित किया गया।

ब्लॉक प्रमुख सुशील कुमार सिंह की अध्यक्षता में गुरुवार को ब्लॉक सभागार में महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।जिसमें अहिल्याबाई होलकर को याद करते हुए महिलाओं के लिए उनके योगदान को बताया गया तथा उनके पदचिन्हों पर चलने के लिए महिलाओं को प्रेरित किया गया।इस दौरान सामाजिक उत्थान में लगी कुछ महिलाओं को कार्यक्रम में सम्मानित किया गया।इस अवसर पर पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि महिलाओं के लिए केंद्र व राज्य सरकार निरंतर लगातार काम कर रही है। भाजपा महिला संगठन की जिला उपाध्यक्ष पिंकी दयाल ने अहिल्या बाई होलकर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मालवा में शासक के रूप में काम करते हुए महिलाओं के हित में तमाम कार्य किया है।बीडीओ राजीव पांडे ने महिला सशक्तिकरण व अहिल्या बाई होलकर की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान एडीओ पंचायत राजू भारतीय, मंडल अध्यक्ष लवलेश पांडे, अखिलेश मिश्र, कमल पांडे सहित सैकड़ो लोग मौजूद रहे।

निमंत्रण से लौट रहे दलित पर हमला, दो नामजद व छः अज्ञात पर मुकदमा दर्ज

बेलखरनाथ धाम। निमंत्रण खाकर घर वापस लौट रहे दो दलित चचेरे भाइयों पर आधा दर्जन से अधिक लोगों ने रास्ते में रोककर लाठी डंडा लोहे की राड से हमला कर दिया। जिसमें दोनों भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने दो नामजद छः अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। दिलीपपुर थाना क्षेत्र के रतनमई गांव निवासी दलित श्याम लाल ने सोमवार की रात चचेरे भाई के साथ निमंत्रण खाकर लौट रहे थे।इसी दौरान कालिकागंज गांव के पास पहले से घात लगाए बैठे आधा दर्जन लोगों ने उन दोनों पर लाठी डंडे से हमला कर दिया। जिसमें दोनों भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंचे परिजन उन्हें अस्पताल ले गए।इस मामले में बुधवार को श्याम लाल की तहरीर पर पुलिस ने चालाक पुर कुर्मियान गांव निवासी महेश पटेल उर्फ छोटू देवेन्द्र पटेल उर्फ धोनी तथा छः अज्ञात के खिलाफ दलित उत्पीड़न मारपीट सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है।इस संबंध में थानाध्यक्ष दिलीप पुर शत्रुघ्न वर्मा ने बताया कि दो गुटों में मारपीट हुई है जिसमें एससी एसटी एक्ट के तहत आरोपितों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया है।

युवक पर लोहे की राड से हमला

पट्टी। घर के दरवाजे पर पौधा लगाने से मना करने पर युवक के ऊपर लोहे की राड से हमला कर दिया। जिससे युवक गंभीर रुप से घायल हो गया। युवक ने पट्टी कोतवाली में पहुंचकर तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। पट्टी कोतवाली के ठनेपुर गोपापुर गांव निवासी अवधेश कुमार पुत्र रामदुलार ने शिकायती पत्र देकर आरोपित किया है कि सुबह दस बजे वह घर पर ही था। पडोस के ही कुछ लोग उसके घर के दरवाजे के पास पौधा लगा रहे थे। जब उसने इसका विरोध किया तो वो लोग हमलावर हो गए। जब वह अपने बचाव के लिए घर में भागा तो आरोप है कि वो घर में घुसकर लोहे की राड से हमला कर दिया। जिससे उसका सिर फट गया। हल्ला गुहार पर जब आसपास के लोग पहुंचे तो उसकी जान बच सकी। युवक ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

उर्से अतीकी पर हुई चादरपोशी, मुल्क की हिफाजत की मांगी गयी दुआ

अखंड भारत संदेश

उर्से अतीकी पर मुल्क की हिफाजल की दुआ मांगते अकीदतमंद

लालगंज। नगर पंचायत के खानापटटी वार्ड में गुरूवार को उर्से सूफी अतीके मिल्लत में जायरीन जुटे दिखे। अठारहवें सालाना फातेहा पर अकीदतमंदों ने मदरसा दारूल उलूम बाबुननवी में मौलाना अतीक की मजार पर चादरपोशी व गुलपोशी की। हजरत मौलाना रहमानी मियां की अध्यक्षता में हुए उर्से अतीकी में मुल्क की एकता तथा शांति को लेकर आपसी भाईचारे की मजबूती का भी ऐलान हुआ। वहीं जलसे में दूरदराज से आये ओलमाए केराम व शायरों ने नात व तकरीर पेश की। शेरों शायरी व तकरीर में कहा गया कि मुल्क की हिफाजत तथा बेहतरी के लिए जरूरत पड़ने पर हर शख्स कुबार्नी देने को तैयार है। इलाकाई विधायक आराधना मिश्रा मोना की ओर से मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने चादर शरीफ पेश किया। संचालन बेलाल रहमानी ने किया। इस मौके पर आबिद अली, अब्दुल लतीफ खान, अतीक खान, अम्मार रहमानी, सईद खान, जर्रार अहमद, वकार अहमद, मो. हिफजान, रईस खान, मो. उमैद, शेख सलीम, मो. शहजाद, मो. नसीम, नियाज बाबुरी, हाफिज मो. शोएब आदि रहे।

खुयलन धाम झील एक आदर्श पर्यावरण स्थल बनकर उभर रहा : अश्वनी कुमार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उपायुक्त श्रम रोजगार अश्वनी कुमार ने बताया है कि प्रदेश के शीर्ष पांच जल संरक्षण स्थलां में शामिल विकास खण्ड मान्धाता के ग्राम पंचायत नेवाड़ी में स्थित मां खुयलन धाम न केवल धार्मिक आस्था का केन्द्र बन रहा है, बल्कि इको सिस्टम और जैव विविधता के संरक्षण का आदर्श उदाहरण भी बनता जा रहा है। झील के कायाकल्प और जल भराव से अब यह क्षेत्र प्राइमरी कंज्यूमर (घास, शैवाल खाने वाले जीव), सेकेंडरी कंज्यूमर (मछलियां, पक्षी आदि) एवं डिकम्पोजर (कीट, जीवाणु) के लिये संतुलित आवास बन रहा है। झील का जलभराव सुनिश्चित कर स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को जीवंत रखा गया है जिससे प्राकृतिक जैव विविधता बनी रहेगी और इको सिस्टम की निरन्तरता भी बनी रहेगी। इस कार्य में जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी का कुशल मार्गदर्शन एवं मुख्य विकास अधिकारी डॉ दिव्या की दूरदर्शिता और पर्यावरणीय सोच उल्लेखनीय रही है। उन्होंने जलवायु सुधार व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के दृष्टि से इस योजना को गति दी। उनका यह प्रयास न केवल वर्तमान पीढ़ी बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिये एक अमूल्य धरोहर होगा। जिला प्रशासन, स्थानीय प्रशासन एवं ग्राम प्रधान नेवाड़ी अनिल यादव और आम जनमानस की सहभागिता से खुयलन धाम झील अब एक आदर्श पर्यावरण स्थल बनकर उभर रहा है, जहॉ जल, जीवन और प्रकृति के बीच संतुलन का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है।

कृषि संगोष्ठी एवं जागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

कार्यक्रम में उपस्थित लोग

प्रतापगढ़। जनपद में ग्राम स्तर पर विकसित कृषि संकल्प अभियान-2025 का 29 मई से 12 जून तक आयोजन किया जा रहा है। जिसे मुख्यमंत्री द्वारा भी शुभारंभ किया गया है। विकसित कृषि संकल्प अभियान तहत जनपद में विकास खण्ड कुण्डा ग्राम सभा ऐमा अस्भव, मुबारकपुर, पटिहार, विकाखण्ड़ कालाकांकर ग्राम सभा मनार, जाजूपुर, रानीमऊ, विकासखण्ड लालगंज ग्राम सभा रोहना, कलापुर, देहलूपुर जिसमें विनोद कुमार यादव उप कृषि निदेषक के द्वारा ह्यविकसित कृषि संकल्प अभियान-2025 जनपद के विकास खण्ड-लालगंज की ग्राम सभा रोहना एवं कालाकांकर की ग्राम सभा मनार तथा जिला कृषि अधिकारी अशोक कुमार द्वारा विकास खण्ड़ कुण्ड़ा के ग्राम सभा ऐम्मा अस्भव के कृषको को विकसित कृषि संकल्प अभियान-2025 के अन्तर्गत आयोजित विशेष कृषि संगोष्ठी एवं जागरूकता का कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें किसानो को सम्बोधित करते हुए भारत सरकार एवं प्रदेष सरकार द्वारा किसानो के हित में चलाये जा रहे योजनाओं का लाभ उठाकर किसान न अपनी आय दोगुनी कर सकते है बल्कि किसी को लाभकारी व्यवसाय में बदल सकते है। इस अवसर पर वरिष्ठ तकनीकी सहायक वीरविक्रम सिंह द्वारा किसानों को बीज सोधन एवं भूमि-सोधंन के साथ-साथ सरकार द्वारा संचालित द्वारा अन्य योजनाओं के बारे में जानकारी दी गयी है। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र के डॉ0 एन0के0सिंह, डॉ0पी0के0 सिंह, डॉ0 ए0के0 सिंह, डॉ0 प्रेसजीत देवनाथ, डॉ0 एम0पी0 सिंह एवं डॉ0 यतेन्द्र कुमार द्वारा कृषकों नवीनतम खेती करने की जानकारी दी गयी। दिनांक 30 मई को विकास खण्ड कालाकांकर में ग्राम सभा ऐठू, कांडई, रेवली, विकास खण्ड़ बाबागंज में ग्राम सभा बहोरिपुर, वजीरपुर, जगापुर, विकास खण्ड़ रामपुर संग्रामगढ़ में ग्राम सभा नरई, संग्रामगढ़ एवं हिसामपुर में ह्यविकसित कृषि संकल्प अभियान-2025 का आयोजन किया जायेगा।

कृषि गोष्ठी में दी गयी जागरूकता

प्रतापगढ़। कृषि संकल्प अभियान के तहत लालगंज विकासखण्ड के रोहाड़ा ग्राम में जागरूकता गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ0 यतेन्द्र कुमार एवं डॉ0 महेन्द्र प्रताप सिंह ने किसानों को खरीफ के मौसम में खेती को लेकर उन्नत कृषि विधियों की जानकारियां प्रदान की। डॉ0 यतेन्द्र ने किसानों को धान की नर्सरी, मृदा शोध व मृदा परीक्षण के साथ उन्नत बीजों को चयनित करने के गुर बताये। डॉ0 महेन्द्र प्रताप सिंह ने किसानों को खरीफ में बोयी जाने वाली सब्जियों को लेकर नई तकनीक से अवगत कराया। प्रदीप वर्मा व गिरजाशंकर ने कृषि नीति को लेकर विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि वैज्ञानिक महेन्द्र प्रताप सिंह व संचालन संजय लाल श्रीवास्तव ने किया। इस मौके पर नेहा यादव, रमेशचंद्र तिवारी, प्रवीण सिंह, राजकुमार सिंह, कमलेश बौद्ध, रामकृष्ण तिवारी, जटाशंकर तिवारी, अमरावती, भोलानाथ मिश्र आदि रहे।

मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम का जीवन समाज के लिए अनुकरणीय : डा. वेदांती

बोले डीएम-बिखरते हुए समाज को अच्छाई की सीख देती है श्रीराम कथा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सई नदी के तट पर सच्चा बाबा आश्रम चिलबिला में आयोजित विष्णु महायज्ञ व श्रीराम कथा का शुभारंभ हुआ। इसमें कथाव्यास पूर्व सांसद और राम कथा के प्रखर वक्ता डा. रामविलास वेदांती ने कहा कि प्रभु श्रीराम का जीवन संसार के लिए प्रेरणा है। उनमें पितृ भक्ति है और प्रजा के प्रति दयालुता है। वह भक्तों के कृपा निधान हैं, दीनों को तारते हैं। डा. वेदांती ने कहा कि वाल्मीकि रामायण न देखकर लिखा गया, न ही पढ़ा गया। यह महर्षि की आत्मानुभूति की हुई दैवीय कृपा की अमर कृति है। उन्होनें बताया कि रामायण को सुनने से हमें अपनी सनातन संस्कृति का ज्ञान होता है। इसके पहले डीएम शिवसहाय अवस्थी ने कथाव्यास का पूजन करते हुए दीप जलाकर कथा का श्रीगणेश किया। डीएम ने कहा कि बिखरते हुए समाज को अच्छाई की सीख राम कथाओं से मिलती है। इस प्रकार के आयोजन की निरंतरता बनी रहनी चाहिए। इस मौके पर आयोजक महंत मनोज ब्रह्मचारी ने संतों का स्वागत करते हुए कहा कि यह आयोजन जन-जन के कल्याण के लिए हो रहा है। लाखों आहुतियां विष्णु महायज्ञ में वैदिक विद्वान व बटुक अर्पित कर रहे हैं। जहां यज्ञ होता है, वहां सबका मंगल होता है। भाजपा नेता डा. आशुतोष त्रिपाठी ने कथाव्यास व भगवान की आरती उतारी। इस मौके पर स्वामी दिव्यानंद, प्रमोद सिंह मुन्ना, अनिल प्रताप त्रिपाठी, गणेश श्रीवास्तव, पं. अशोक शर्मा, अच्युतानंद पांडेय, अधिवक्ता संतोष त्रिपाठी, विकास पांडेय, दीपेंद्र मिश्र आदि मौजूद रहे।

आईजीआरएस शिकायतो के निस्तारण का डीएम ने किया भौतिक सत्यापन

रामवन गमन मार्ग एवं ओवरब्रिजों के निर्माण कार्य को बरसात से पहले पूर्ण कराये जाने के डीएम ने दिये निर्देश,निर्माणाधीन रामवन गमन मार्ग में उड़ रहीं धूल पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए मार्ग में लगातार पानी का छिड़काव कराये जाने के निर्देश कार्यदायी संस्था को दिये

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी द्वारा निरीक्षण के दौरान आई०जी०आर०एस की शिकायतो के निस्तारण का भौतिक सत्यापन किया गया एवं निमार्णाधीन रामवन गमन मार्ग का भी निरीक्षण कर कार्य की प्रगति का जायजा लिया गया। आई०जी०आर०एस सन्दर्भ संख्या-20017425006285 शिकायतकर्ता अर्जुन लाल पुत्र स्व० छेदी लाल निवासी ग्राम-बबुरा तहसील मंझनपुर द्वारा अवैध अतिक्रमण के सम्बन्ध में शिकायत की गयी थी। प्रकरण का स्थलीय एवं अभिलेखीय जाँच कराए जाने पर पाया गया कि मौजा पाता स्थित आराजी सं0-66 मि०रकबा 0.228 हे0 कलेक्ट्रेट के नाम अभिलेख में अंकित है। रकबा 0.251 है० बंजर खाते में तथा 0.605 हे० ऊसर के खाते में अंकित है। प्रार्थी के पिता को 66मि० रकबा 0.228 हे० भूमि पट्टा कृषि आवंटन के लिए मिला था, जो वर्तमान समय पर निरस्त होकर बंजर खाते में अंकित है। प्रार्थी का इसी भूमि पर पूर्व मकान निर्मित है। इसी आराजी संख्या बंजर भूमि पर आवेदक द्वारा पूर्व निर्माण किया गया था, जिसे नायब तहसीलदार, राजस्व टीम, अधिशाषी अधिकारी एवं पुलिस बल की उपस्थिति में ध्वस्त करा दिया गया है। जिसका जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी द्वारा स्वयं मौके पर पहुँचकर मौका मुआयन किया गया, निस्तारण सही पाया गया। इसी प्रकार आई०जी०आर०एस सन्दर्भ संख्या-92517400007841 शिकायतकर्ता शिवशंकर निवासी ग्राम टेंवा परगना अथरवन तहसील मंझनपुर द्वारा मुआवजा दिलाये जाने के सम्बन्ध में शिकायत की गयी थी। प्रकरण का स्थलीय एवं अभिलेखीय जाँच कराए जाने पर पाया गया कि आराजी सं0-270मि० रकबा 0.114 हे0 वर्तमान राजस्व अभिलेख में चारागाह भूमि के रुप में अंकित है। जिस पर प्रार्थी का आवास बना था, जो 731-ए० रामवनगमन मार्ग परियोजना के अन्तर्गत अधिग्रहीत/आच्छादित हो चुका है। जिसमें प्रार्थी द्वारा प्रश्नगत योजना के अन्तर्गत प्रभावित होने के उपरान्त मुआवजे की मांग की जा रही है। प्रार्थी का मकान ग्रामसभा के अन्तर्गत चारागाह की सुरक्षित भूमि पर बना है। इसलिए प्रार्थी को सुरक्षित भूमि पर बने हुए मकान का कोई भी मुआवजा नियमानुसार नहीं दिया जा सकता है। प्रार्थी को उपरोक्त के सम्बन्ध में अवगत करा दिया गया है कि आपको मुआवजा मिलना उचित नहीं है। जिसका जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी द्वारा स्वयं मौके पर पहुँचकर मौका मुआयन किया गया, निस्तारण सही पाया गया। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान शिवशंकर की माली हालत को देखते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया कि जो भी नियमानुसार सहायता दी जा सकती हैं, उसे एकमुश्त देकर इनकी सहायता की जाय। आई०जी०आर०एस0 सन्दर्भ संख्या-41017425000081, 40017425010176, 10178, 10179, 20017425006199 शिकायतकर्ता नथन लाल पुत्र जगन्नाथ निवासी ग्राम-टेंवा तहसील मंझनपुर द्वारा प्रार्थी को उसके हिस्से की भूमि दिलवाने के सम्बन्ध में शिकायत की गयी थी। प्रकरण का स्थलीय एवं अभिलेखीय जाँच कराए जाने पर पाया गया कि आराजी सं0-1079 रकबा 0.228 हे0 पर प्रार्थी का नाम असंक्रमणीय भूमिधर के रुप सहखातेदार अभिलेख में अंकित है। प्रार्थी के पट्टे की भूमि पर प्रार्थी का सम्पूर्ण रुप से कब्जा व दखल है। विपक्षीगणों के पिता के नाम भी प्रश्नगत आराजी 1079 मि० रकबा 0.228 हे0 संक्रमणीय भूमिधर के रुप में अंकित है। प्रार्थी का कब्जा होने के बाद भी अनावश्यक रुप से असत्य एवं निराधार प्रार्थना पत्र दिया जा रहा है। जिसका जिलाधिकारी श्री मधुसूदन हुल्गी द्वारा स्वयं मौके पर पहुँचकर मौका मुआयन किया गया निस्तारण सही पाया गया। इसके उपरान्त जिलाधिकारी द्वारा रामवन-गमन मार्ग में चल रहें निर्माण कार्य की प्रगति का निरीक्षण कर जायजा लिया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने रामवन गमन मार्ग में उड़ रहीं धूल पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए निमार्णाधीन सड़क पर लगातार पानी का छिड़काव कराये जाने के निर्देश कार्यदायी संस्था को दियें, जिससे धूल न उड़ें एवं लोंगो को आवागमन तथा वहॉ पर निवास करने वाले व्यक्तियों को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़ें। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि बरसात के पहले हर हाल में निर्माण कार्य को पूर्ण करायें एवं जहॉ-जहॉ पर ओवरब्रिजों का निर्माण हो रहा है, उन कार्यों में तेजी लाते हुए बरसात के पहले अवश्य पूर्ण करायें। उन्होंने रामवन गमन मार्ग में आने वाली बाधाओं एवं अवरोधों को हटवाते हुए निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिये।

पत्नी की आदतों से तंग आकर पति ने महिला प्रकोष्ठ में की शिकायत

कौशाम्बी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के इसीपुर पुरखास गांव निवासी एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी की गलत आदतों से तंग आकर महिला प्रकोष्ठ में शिकायत दर्ज कराई है। उसका आरोप है कि उसकी पत्नी का पराए मर्दों के साथ नाजायज संबंध है जिसके चलते घर में आए दिन विवाद बना रहता है। इसीपुर पुरखास गांव निवासी एक ब्यक्ति ने बताया कि 14 वर्ष पूर्व पिपरी थाना क्षेत्र के पेरई गांव में उसकी शादी हुई थी। शादी के बाद सब कुछ ठीक चल रहा था। पति-पत्नी के संसर्ग से चार पुत्र भी हुए लेकिन कुछ वर्ष बीत जाने के बाद उसकी पत्नी का पराए मर्द से नाजायज संबंध हो गया है। मना करने पर महिला अपने पति के साथ मारपीट पर उतारू हो जाती है। ब्यक्ति ने इस बात की जानकारी ससुराल पक्ष को दिया लेकिन उसका कोई फायदा नहीं हुआ जिसके बाद पति ने अपनी पत्नी के खिलाफ महिला प्रकोष्ठ में शिकायती पत्र देकर न्याय की मांग की है। पराए मर्दों से महिला के संपर्क के चलते परिवार बिखर रहा है।

बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ योजना अर्न्तगत संयुक्त जिला चिकित्सालय में कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी के निर्देशन में महिला कल्याण विभाग द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजनान्तर्गत बालिका के जन्म के प्रति समाज में सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने एवं उनके स्वस्थ्य, समृद्ध, सुरक्षित व उत्कृष्ट जीवन के लिए संयुक्त जिला चिकित्सालय मंझनपुर में कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन जिला प्रोबेशन अधिकारी की उपस्थिति में किया गया। संयुक्त जिला चिकित्सालय मंझनपुर में जन्म लेने वाली 10 नवजात बच्चियों के माताओं को बेबी किट, कपड़े, ड्राईफूटस, पौधे के साथ गमला, केक, मिष्ठान व सम्मान पत्र आदि प्रदान करते हुये केक काटकर कन्या जन्मोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर जिला प्रोबेशन अधिकारी श्रीमती मंतशा द्वारा बताया गया कि बेटा/बेटी में भेदभाव न करें एवं दोनों को समान अवसर प्रदान करें। इसके साथ ही महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के बारे में जानकारी दी गयी।इस अवसर पर कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम में डायट प्राचार्य, जिला प्रोबेशन अधिकारी, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी, संरक्षण अधिकारी, जिला चिकित्सालय के चिकित्सक व स्टाफ नर्स एवं वन स्टाप सेन्टर के कर्मचारी तथा नवजात बच्चियों के माता-पिता आदि उपस्थित रहे।

चौकी पुलिस के संरक्षण में पेड़ भी काट ले गए दबंग घर में चढ़कर किया गाली गलौज

कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील के भरसवां ग्राम सभा में अनुसूचित जाति के नाम पर दबंगई करने वाले लोगों ने पेड़ भी जबरिया काट लिया उसके बाद मना करने पर गाली गलौज भी किया मामले को लेकर चौकी पुलिस ढुलमुल रवैया अपना रही है जिससे पेड़ काटने वाले दलित दबंगो के हौसले बुलंद है सवाल उठता है कि दूसरे की संपत्ति छीन कर ले जाना यह कहां का कानून है काश्तकारी में विनय कुमार पांडे के बबुल के पेड़ को रात में गांव के दलित दबंगों द्वारा काट दिया गया जानकारी होने पर जब उलाहना दिया गया तो दबंग लोग घर पर न थे उनके घरों पर बता कर चले आए रात 9:30 बजे दबंग संजय सरोज राकेश और आशीष सरोज मिलकर विनय पांडे के घर पर चढ़कर गाली गलौज जान से मार देने की धमकी दिया और बोला खेत की तरफ आओगे तो गोली मार दूगा जिसकी शिकायत टेवा चौकी पुलिस में की गई लेकिन वहां पर हल्का चौकी सिपाही अरुण कुमार यादव द्वारा दरवाजे पर जाना भी उचित नहीं समझ सका पुलिस का रवैया ढुलमुल है और अपराध करने वालों से ही पुलिस वसूली कर मालामाल होती है जबकि भुक्तभोगी के पास रात का वीडियो भी अंधेरे का है ऐसे पर चौकी पुलिस पर भी सवाल उठते हैं की क्या पुलिस के सह पर दलित दबंग द्वारा खेल खेला जाता है इसकी शिकायत पुलिस कप्तान मंझनपुर को दी गई उन्होंने तत्काल कोतवाल मंझनपुर को आदेशित किया जिस पर मंझनपुर कोतवाल द्वारा तत्काल मामले का देखते हुए चौकी इंचार्ज को सख्त आदेश दिया गया है इस तरह किसी के घर पर चढ़कर गाली गलोज करना व मारने की धमकी देना जिससे भुक्तभोगी डरा सहमा है, दबंग इतने दबंगई पर उतारू थे कि उसकी निजी भूमि पर मिट्टी निकलवा कर बेचकर पैसा कमाना चाहते हैं इसी के विरोध पर इस तरह की वर्तात कर अपनी दबंगई के बल पर घर पर चढ़कर गाली गलौज किए हैं भुक्तभोगी विनय कुमार पांडे ने कार्रवाई की मांग की है।

न्यूज झरोखा

न्यूज रिपोर्टर क्लब के पूर्व अध्यक्ष योगेंद्र सिंह के पिता के निधन पर शोकसभा आयोजित

कौशांबी। न्यूज रिपोर्ट्स क्लब के पूर्व अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार योगेंद्र सिंह के पूज्य पिता का बुधवार को दुखद निधन हो गया। उनके निधन की सूचना मिलते ही पत्रकारिता जगत में शोक की लहर दौड़ गई। पुण्य आत्मा की शांति के लिए वृहस्पतिवार को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया क्लब कौशांबी कार्यालय में एक शोकसभा का आयोजन किया गया।शोकसभा में क्लब के सदस्यों सहित पत्रकारिता जगत से जुड़े कई वरिष्ठजन उपस्थित रहे। सभी ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की और शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की शोकसभा में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया क्लब के संस्थापक धारा सिंह, संरक्षक प्रसिद्ध मिश्रा, अध्यक्ष अली मुक्तेदा, महामंत्री इंतेजार रिजवी, सतेंद्र खरे, कोषाध्यक्ष रामकिशन, खादिम रिजवी, नावेद खान, फैज, मेराज शेख, इंतेयाज, शादाब रिजवी सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति और परिवार को इस दुखद घड़ी में धैर्य एवं संबल प्रदान करने की प्रार्थना की।

घर में लगी आग,छप्पर सहित गृहस्थी का सामान खाक

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली क्षेत्र के ग्राम सभा घुमाई के मजरे लोधन के पुरवा में एक किसान के घर में आग लग गई जिससे किसान की गृहस्थी जलकर खाक हो गई किसान रामसजीवन पुत्र ननकू के अनुसार बरामदे में खाना बनाकर पूरा परिवार खेतों की तरफ चला गया था अचानक हवा से चिंगारी उड़कर छप्पर में लगी और धू धूकर भीषण आग लग गई जब तक मुहल्ले के लोग आग बुझाते छप्पर के नीचे रखी गृहस्थी सहित तमाम सामान जलकर खाक हो गया।

शौच करने गए युवक की तालाब में डूबने से मौत परिजनों में मचा कोहराम

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली क्षेत्र के कनवार ग्राम सभा के मजरे मेड़ीपुर में एक युवक की तालाब में डूबने से संदिग्ध परिस्थितियों मौत हो गई है।आशीष कुमार उम्र लगभग 16 वर्ष पुत्र चिरौंजी लाल निवासी कनवार मजरे मेड़ीपुर आज सुबह शौच के लिए गांव के मेदनी तालाब की ओर गया था जब काफी समय बाद भी युवक घर नहीं पहुंचा तो परिजन खोजते हुए मेदनी तालाब की ओर गए तालाब के किनारे पानी में युवक आशीष का शव पड़ा था जिसे गांव के लोगों के सहयोग से बाहर निकाला गया तब तक युवक की मौत हो गई परिजनों की सूचना पर पहुंची अझुवा चौकी पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया

पॉक्सो एक्ट में वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशांबी। जिले में दिनांक 28.05.2025 को थाना सैनी पर वादी द्वारा सूचना दी गयी की धन्नू उर्फ सिद्धार्थ उनकी नाबालिक पुत्री को सूनसान जगह ईंट भट्ठा मे ले जा कर उसके साथ गलत काम(बलात्कार) किया है। प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना सैनी पर सुसंगत धाराओं मे अभियोग पंजीकृत किया गया । उपरोक्त क्रम मे थाना सैनी पुलिस टीम द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए उक्त अभियोग से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त धन्नू उर्फ सिध्दार्थ तिवारी पुत्र रामबाबू तिवारी निवासी लोहंदा थाना सैनी को लोंहदा मोड़ तिराहा बाहद ग्राम लोहंदा के पास से गिरफ्तार किया गया विधिक कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेजा गया।

लापरवाही पूर्वक वाहन चलाकर टक्कर मार देने का अभियुक्त 2250 रू0 के अर्थदण्ड से दण्डित

कौशांबी। जिले में दिनांक 12.06.2020 को थाना कौशाम्बी पुलिस को सूचना मिली कि अभियुक्त द्वारा ट्रक को तेजी व लापरवाही से चलाकर वादी के मकान में टक्कर मार दी है । इस सम्बन्ध में थाना कौशाम्बी पर मु0अ0सं0 30/20 धारा 279/427 भादवि पंजीकृत किया गया था । जिसमें त्वरित विवेचना के उपरान्त आरोप पत्र माननीय न्यायालय में दाखिल किया गया था । जिससे सम्बन्धित अभियुक्त सिकन्दर पाल पुत्र राम खेलावन निवासी दुधारा संथार आरा कला थाना फूलपुर जनपद प्रयागराज को आज दिनांक 29.05.2025 को माननीय न्यायालय सीजेजेडी/एफटीसी-2 जनपद कौशाम्बी द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्तों को सजा दिलाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी के निर्देशन में मानिटरिंग सेल के माध्यम से प्रभावी पैरवी कराते हुए अभियुक्त को 2250/- रू0 के अर्थ दण्ड से दण्डित किया गया।

नाबालिग को बहला फुसला कर भगा ले जाने वाला वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशांबी। जिले के थाना मंझनपुर पर वादी द्वारा सूचना दी गयी की रिंकू सरोज पुत्र खेतई सरोज उनकी नाबालिक पुत्री को बहला फुसलाकर भगा ले गया है । प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना मंझनपुर पर सुसंगत धाराओं मे अभियोग पंजीकृत किया गया । उपरोक्त क्रम मे थाना मंझनपुर पुलिस टीम द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए उक्त अभियोग से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त रिंकू सरोज पुत्र खेतई सरोज निवासी अहिरन का पुरा थाना मंझनपुर को मंझनपुर बस स्टैंड के पास से गिरफ्तार किया गया है । विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेजा गया।

राज्य चिकित्सा महाविद्यालय में एमबीबीएस प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं द्वारा वर्टिकल इंटीग्रेशन पर आधारित एक शैक्षणिक सेमिनार का किया गया आयोजन

कौशाम्बी। स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, कौशांबी में फिजियो लॉजी विभाग के तत्वाधान में एमबीबीएस प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं द्वारा वर्टिकल इंटीग्रेशन पर आधारित एक शैक्षणिक सेमिनार का आयोजन प्रधानाचार्य, चिकित्सा महाविद्यालय डॉ0 हरि ओम कुमार सिंह की अध्यक्षता में किया गया। इस सेमिनार के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें बाल रोग विभाग (चंमकपजतपबे) के साथ समन्वय किया गया।कार्यक्रम का आयोजन आचार्य डॉ. सरस्वती जयसवाल यादव, सहायक आचार्य डा0 शिवम बिशनोई एवं ट्यूटर फिजियोलॉजी डा0 रीना कुमारी द्वारा किया गया। प्राचार्य प्रो0 डॉ. हरि ओम कुमार सिंह ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बताया कि विषयों को इस प्रकार एक-दूसरे से जोड़ा जाता है, कि छात्र किसी रोग या संरचना को मूल वैज्ञानिक आधार से लेकर उसके चिकित्सकीय उपयोग तक समझ सकें। उन्हांने कहा कि सेमिनार का उद्देश्य विद्यार्थियों में विषयों के बीच समन्वय की समझ विकसित करना एवं चिकित्सकीय शिक्षा को अधिक व्यवहारिक और रोगी-केंद्रित बनाना है। उन्होंने बताया कि इस प्रकार की अध्ययन प्रणाली विद्यार्थियों में आरंभ से ही क्लिनिकल अप्रोच को विकसित करती है तथा पेशेंट ट्रीटमेंट एजुकेशन की शुरूआत पहले वर्ष से ही संभव होती है। सेमिनार में डॉ. विकेश कुमार दुबे, सहायक आचार्य द्वारा नवजात शिशु मे बृद्वि एवं विकास के चरणों के बारे मे जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर शैक्षणिक गतिविधि में एमबीबीएस प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राये-नवनीत कुमार, नेहा कुटार, निदा नकवी, निशान्त भरद्वाज एवं निशान्त मावी आदि द्वारा प्रतिभाग किया गया।

विकास खण्ड कड़ा एवं कौशाम्बी में विकसित कृषि संकल्प अभियान का आयोजन

कौशाम्बी। उप कृषि निदेशक सतेन्द्र कुमार तिवारी द्वारा अवगत कराया गया कि जनपद के विकासखण्ड कड़ा के ग्राम डोरमा, निंदूरा, त्रिलोकपुर व मूरतगंज के ग्राम उमरछा, मोहनपुर, हठिया भीठा व कौशाम्बी के ग्राम बैंगवां फतेहपुर, मढी, ढेकाही में तीन पालियों में विकसित कृषि संकल्प अभियान का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया। यह कार्यक्रम 29 मई, 2025 से प्रारम्भ होकर 12 जून, 2025 तक निरन्तर चलेगा। इस कार्यक्रम में किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ डॉ0 अजय कुमार, डॉ0 मीनाक्षी सक्सेना, डॉ0 आशीष कुमार श्रीवास्तव ने किसानों को आय में वृद्धि करने के लिए उन्नत बीज शोधन, गन्ने के साथ सह फसली खेती, मिट्टी का स्वास्थ्य एवं उपचार, संतुलित मात्रा में उर्वरक का प्रयोग, औद्यानिक फसलों का विस्तार, चारा उत्पादन तथा पशु जनित रोगों की रोकथाम और उनकी नस्लों के सुधार, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन एवं ड्रिप स्प्रिंकलर सिंचाई द्वारा कम पानी से उन्नत खेती आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान किया।इस अवसर पर सतेन्द्र कुमार तिवारी उप कृषि निदेशक द्वारा किसानों को बताया गया कि जनपद में खाद एवं बीज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। किसान अपने विकासखण्ड से सम्बन्धित राजकीय कृषि बीज भण्डार पर जाकर खरीफ सत्र की फसलों के बीज प्राप्त कर सकते हैं।

आबकारी अधिनियम का अभियुक्त जेल में बितायी गयी अवधि व 1500 रू0 के अर्थदण्ड से दण्डित

कौशांबी। जिले में अभियुक्त के कब्जे से चार लीटर शराब व प्लास्टिक की पिपिया तथा एक बोतल शराब कच्ची महुआ व शराब बनाने के उपकरण बरामद होने पर दिनांक 16.01.2002 को थाना सराय अकिल पर मु0अ0सं0 09/2002 धारा 60/60(2) आबकारी अधिनियम पंजीकृत किया गया था । जिसमें त्वरित विवेचना के उपरान्त आरोप पत्र माननीय न्यायालय में दाखिल किया गया था । जिससे सम्बन्धित अभियुक्त शिवबरन पुत्र बछन्दर केवट निवासी मल्हीपुर थाना सराय अकिल को आज दिनांक 29.05.2025 को मा0 न्यायालय एसीजे(एसडी) जनपद कौशाम्बी द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्तों को सजा दिलाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी के निर्देशन में मानिटरिंग सेल के माध्यम से प्रभावी पैरवी कराते हुए अभियुक्त को जेल में बितायी गयी अवधि व 1500/- रू0 के अर्थ दण्ड से दण्डित किया।

दो लड़कियों को बहला फुसलाकर ले जाने वाली वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशांबी। जिले में दिनांक 27.05.2025 को थाना कोखाज पर वादी द्वारा सूचना दी गयी कि सुमित्रा देवी आदि उनकी पुत्री उम्र करीब 18 वर्ष व उनकी पुत्री की सहेली उम्र 14 वर्ष को बहला फुसलाकर बेचने के उद्देश्य से ले गये हैं । प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना कोखराज पर सुसंगत धाराओं मे अभियोग पंजीकृत किया गया था । उपरोक्त क्रम मे थाना कोखराज पुलिस टीम द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए! उक्त अभियोग से संबंधित अभियुक्ता सुमित्रा देवी पत्नी मूलभवन निवासी मलाक भायल थाना कोखराज उम्र करीब 30 बर्ष को चाकवन चौराहे के पास से गिरफ्तार किया गया है विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेजा गया।

कोखराज पुलिस ने वारण्टी अभियुक्त को किया गिरफ्तार

कौशांबी। जिले के पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहें अभियान के क्रम में थाना कोखराज पुलिस टीम द्वारा इजरा वाद सं0 87/2021 धारा 128 दं0प्र0सं0 प्रधान परिवार न्यायालय कौशाम्बी से सम्बन्धित वारण्टी अभियुक्त रामहरक उर्फ पिन्टू पाल पुत्र रामविपत निवासी टिकरा थाना कोखराज को गिरफ्तार किया गया विधिक कार्यवाही के पश्चात गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायालय भेजा गया

आधा किलो गांजा के साथ एक अभियुक्त गिरफ्तार

कौशांबी। जिले में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना सैनी पुलिस टीम द्वारा दिनांक 28-05-2025 को गस्त/चेकिंग के दौरान मुखबिर की सटीक सूचना पर अभियुक्त रामविशाल पुत्र स्व० रामसजीवन निवासी ग्राम सझिया थाना चरवा को गुलामीपुर अटसराय हाईवे किनारे से गिरफ्तार किया गया अभियुक्त के कब्जे से 500 ग्राम नाजायज गांजा बरामद किया गया। विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेजा गया।

सम्पादकीय

कोरोना के वास्तविक खतरों से आगाह करना जरूरी

देश में कोरोना की भयावह पदचाप फिर सुनाई देने लगी है और फिलहाल ये आहट धीमी है, लेकिन कब खौफनाक धमक में बदल जाए, कहा नहीं जा सकता। आंकड़ों के मुताबिक बुधवार दोपहर तक 1083 एक्टिव कोरोना केस पाए गए, हालांकि सुबह यह संख्या 1047 थी, यानी बढ़ोत्तरी का सिलसिला शुरू हो गया है। बताया जा रहा है कि महाराष्ट्र में 66 और उत्तर प्रदेश में 10 नए मामले सामने आए हैं। दक्षिण और प.भारत के राज्यों के बाद अब पूर्वी और उत्तरपूर्वी राज्यों में भी कोरोना ग्रसित मरीज पाए गए हैं। इससे मरने वालों की संख्या भी अब 12 तक पहुंच गई है। बता दें कि स्वास्थ्य मंत्रालय के 26 मई तक के आंकड़ों के मुताबिक तब देश में 1010 एक्टिव केस थे, लेकिन अब इसकी संख्या बढ़ गई है और साथ ही कोरोना के 4 नए वैरिएंट की पहचान भी हुई है। दक्षिण और पश्चिम भारत से जिन वैरिएंट की पहचान हुई है, उनमें एलएफ 7, एक्सएफजी, जेएन.1 और एनबी1.8.1 शामिल हैं। अब बाकी जगहों से नमूने लेकर नए वैरिएंट की पड़ताल की जा रही है। कोरोना के नए मामलों को लेकर एम्स के पूर्व डायरेक्टर, डॉक्टर रणदीप गुलेरिया ने कहा है कि नए वेरिएंट के मामले बढ़ रहे हैं, लेकिन अभी गंभीर खतरा नहीं है। वहीं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल ने सोमवार को कहा कि संक्रमण को लेकर गंभीरता की स्थिति अभी तक आमतौर पर हल्की है और चिंता की कोई बात नहीं है। यह सही है कि अब तक महामारी की बात सामने नहीं आई है, लेकिन जो अब तक 12 मौतें हुई हैं, क्या उसके बाद भी अतिरिक्त सतर्कता बरतने की जरूरत नहीं है। दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है, यह पुरानी कहावत है। लेकिन हम जले ही नहीं, झुलसे हुए हैं। याद कीजिए कोरोना की दूसरी लहर के भयावह मंजर को। जब अस्पतालों के बाहर लंबी कतारें लग गई थीं कि एक बिस्तर मिल जाए, एक ऑक्सीजन सिलेंडर मिल जाए, ताकि मरीज की उखड़ती सांसों को आसरा दिया जा सके। एक महिला किस तरह अपने पति को एंबुलेंस में मुंह से सांस देने की कोशिश कर रही थी, वह दृश्य कैसे भूला जा सकता है। श्मशानों से देर रात तक चिताओं से लपटें उठा करती थीं, वहां भी मुर्दे जलाने के लिए कतार लगी रहती थी। जिन शवों को रीति के अनुसार अंतिम संस्कार नसीब नहीं हुआ, उन्हें गंगा की गोद में सौंप दिया गया। सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स पर रोजाना किसी परिचित की मौत की खबर देखने मिलती थी। कितनी दारुण यादें हैं, कहां तक गिनाएं? लेकिन क्या हमारी याददाश्त इतनी कमजोर हो चुकी है कि तीन साल पुरानी बात हम भूल गए हैं।सरकार ने पहली लहर के वक्त लापरवाही दिखाई तो उसका भुगतान दूसरी लहर में करना पड़ा। अब फिर से क्या वही लापरवाही दिखाई जा रही है, यह सोचने वाली बात है। प्रधानमंत्री मोदी 29-30 मई को उप्र और बिहार दौरे पर रहेंगे। उनकी प्राथमिकता इस समय ऑपरेशन सिंदूर को भुनाना है, जिसके लिए वे रोड शो करेंगे। इसके अलावा बिहार चुनाव का मंच सजाना भी भाजपा की तरफ से उनके ही जिम्मे है।

घर-घर के खेल में असुरक्षित घरवाले

- सर्वमित्रा सुरजन

पहले जब सेना के काम का श्रेय सरकारें नहीं लेती थीं, तो किसी सैन्य अभियान के बारे में जानकारी आधिकारिक सूत्रों के जरिए अखबारों, रेडियो, टेलीविजन आदि के जरिए जनता को मिलती थी और जनता को हमेशा से अपनी सेना पर गर्व रहा। याद नहीं पड़ता कि कभी किसी सैन्य अभियान पर जनता ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी हो। लेकिन अब जबकि सरकार से पहले डोनाल्ड ट्रंप ने युद्धविराम का ऐलान कर दिया

जब नेतृत्व स्वयं पथ विचलित, भटका हुआ, और निजी स्वार्थों के चंगुल में फंसा होता है, तब देश कितनी अनावश्यक उलझनों का शिकार होता है, मौजूदा दौर इसकी गवाही दे रहा है। 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के असली दोषी कहां हैं, इसका कुछ पता नहीं है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर से देश में तो मीडिया ने यह सवाल नहीं किया, लेकिन विदेश में जब उनसे इस बारे में पूछा गया तो उनका जवाब था हमने उनकी पहचान कर ली है। अब इसके आगे क्या कार्रवाई सरकार की तरफ से हो रही है, यह गोपनीय ही है और देश फिलहाल यही जान पाया है कि आतंकियों की शिनाख्त कर ली गई है। ये आतंकी पहलगाम तक पहुंचे कैसे, हाथ में बंदूक लेकर जब वो पर्यटकों से भरी बैसरन घाटी में जा रहे थे, तो किसी सुरक्षा एजेंसी की निगाह में कैसे नहीं आए, ये अबूझ पहेली बनी हुई है। ठीक उसी तरह जैसे पुलवामा में विस्फोटकों से लदी कार सैन्य वाहन के पास कैसे पहुंची।

वैसे तो जम्मू-कश्मीर में चप्पे-चप्पे पर सुरक्षा और सैन्य व्यवस्था रहती है, लेकिन कम से कम इन दो बड़ी घटनाओं के वक्त यह व्यवस्था किस खोल में छिपी थी, इसके जवाब सरकार से लगातार मांगे जा रहे हैं और सरकार चुप है। अलबत्ता प्रधानमंत्री मोदी की रैलियों और सभाओं का सिलसिला जारी है, जहां वे ऑपरेशन सिंदूर को लेकर तमाम दावे कर रहे हैं। अपने ऊपर पुष्पवर्षा तक करवा ली, मानो वही पाकिस्तान के आतंकी अड्डों को खत्म करने सीमा पार कर गए थे। इधर भाजपा ने अब एक नया कार्यक्रम शुरू करने का फैसला लिया है, जिसमें घर-घर सिंदूर भाजपा पहुंचाएगी। घर-घर शब्द विन्यास शायद नरेन्द्र मोदी को काफी पसंद है। पहले हर-हर मोदी, घर-घर मोदी का शोर किया, फिर घर-घर नल-जल योजना बनाई, इसके बाद हर घर तिरंगा अभियान चला, अब घर-घर सिंदूर खेला शुरू हो गया है।

इस घर-घर के चक्कर में असल में घर में, घरवालों पर क्या बीत रही है, इसका कोई अंदाज सरकार को नहीं है और शायद वह लगाना भी नहीं चाहती। उसकी मंशा किसी भी घटना से राजनैतिक लाभ लेने की बन चुकी है। सैन्य अभियान हो या आतंकी हमला, हर घटना आखिर में भाजपा के लिए वोट जुगाड़ करने का माध्यम बन जाए, बस इतना ही सरोकार नजर आता है। यही कारण है कि समाज में भयंकर अनिश्चितता पसर गई है और सोशल मीडिया के जरिए इसे और बढ़ाया जा रहा है। पहले जब सेना के काम का श्रेय सरकारें नहीं लेती थीं, तो किसी सैन्य अभियान के बारे में जानकारी आधिकारिक सूत्रों के जरिए अखबारों, रेडियो, टेलीविजन आदि के जरिए जनता को मिलती थी और जनता को हमेशा से अपनी सेना पर गर्व रहा। याद नहीं पड़ता कि कभी किसी सैन्य अभियान पर जनता ने नकारात्मक प्रतिक्रिया दी हो।

लेकिन अब जबकि सरकार से पहले डोनाल्ड ट्रंप ने युद्धविराम का ऐलान कर दिया, जब बार-बार सेना का पक्ष रखने के लिए विदेश मंत्रालय और सेना की तरफ से अधिकारियों को बयान देने सामने आना पड़ा, जब खुद प्रधानमंत्री मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर या युद्धविराम के बाद फौरन राष्ट्र को संबोधित न कर, अपनी सुविधा के मुताबिक देश को संबोधित किया, और उसके बाद लगातार अपने अन्य कार्यक्रमों में ऑपरेशन सिंदूर का श्रेय लेना शुरू कर दिया। भाजपा और उसके समर्थकों के सोशल मीडिया हैंडल पर जब पिछली सरकारों की आलोचना शुरू हो गई, तो फिर देश में असमंजस और बढ़ गया। बेहतर होता कि तीनों सेनाओं की मुखिया होने के नाते राष्ट्रपति मुर्मू खुद राष्ट्र को एक बार संबोधित करती और फिर इस मसले पर बाकी किसी मंच से चर्चा न होती और

देश की सुरक्षा में लगी एजेंसियों, सेनाओं को उनके काम करने दिया जाता तो फिलहाल जो उलझन भरा माहौल बना है, उससे बचा जा सकता था। लेकिन भाजपा ने ऐसा होने नहीं दिया। अब इसका खामियाजा वे लोग भुगत रहे हैं जिन्होंने सोशल मीडिया पर ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े किसी पहलू पर अपने विचार प्रकट किए। ऐसे कम से कम दो उदाहरण सामने आए हैं। पहला उदाहरण अशोका विश्वविद्यालय के प्रो. अली खान महमूदाबाद का है, जिनकी फेसबुक पोस्ट के आधार पर राज्य महिला आयोग ने शिकायत दर्ज की और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि उनकी पोस्ट में गलत क्या था, यह अब तक साबित नहीं हुआ है। मगर स्वतंत्र विचार को रोकने की नीयत इसमें साफ नजर आई। इस मामले में प्रो.महमूदाबाद को 18 मई को गिरफ्तार किया गया था, 21 मई को सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें जमानत दी। इस बीच राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भी स्वतः संज्ञान लेते हुए हरियाणा सरकार को नोटिस दिया और अब इस मामले में बनी विशेष जांच समिति को सुप्रीम कोर्ट ने साफ आदेश दिया है कि वह केवल प्रो.महमूदाबाद पर दायर दो एफआईआर तक ही अपनी जांच सीमित रखे। दरअसल प्रो, महमूदाबाद के वकील कपिल सिब्बल ने अदालत में उनकी डिजिटल डिवाइस तक अधिकारियों की पहुंच की मांग का मुद्दा भी उठाया। जिस पर अदालत ने सख्त टिप्पणी की कि 'दोनों एफआईआर रिकॉर्ड का विषय हैं। डिवाइस की क्या आवश्यकता है? दायरा बढ़ाने की कोशिश न करें। एसआईटी राय बनाने के लिए स्वतंत्र है। बाएं और दाएं मत जाओ।' इधर महाराष्ट्र में भी ऐसा ही प्रकरण घटित हुआ, जिसमें ऑपरेशन सिंदूर पर एक आलोचनात्मक पोस्ट को एक 19 साल की इंजीनियरिंग छात्रा ने रिपोस्ट किया, लेकिन फिर उसे डिलीट भी कर दिया। मगर पुलिस ने उस छात्रा को 9 मई को दर्ज एफआईआर के बाद गिरफ्तार कर लिया, उस पर भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 152, 196, 197, 299, 352 और 353 के तहत मामला दर्ज किया गया। छात्रा का साथ उसके शैक्षणिक संस्थान ने भी नहीं दिया और उसे परीक्षा से वंचित रहना पड़ा। जब मामला बॉम्बे हाईकोर्ट पहुंचा, तो अदालत ने इस मामले में पुलिस प्रशासन और कॉलेज दोनों को आईना दिखाया। जस्टिस गौरी गोडसे और जस्टिस सोमशेखर सुंदरसन की खंडपीठ ने मंगलवार को सुनवाई के दौरान कहा कि 'एक 19 साल की छात्रा ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट किया। जब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो उसने माफी भी मांग ली। इसके बावजूद छात्रा को सुधार का मौका देने के बजाय कॉलेज और सरकार ने उसे अपराधी की तरह ट्रीट किया। जो करना गलत है।' कोर्ट ने कॉलेज प्रशासन पर भी तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि शैक्षणिक संस्थानों का दायित्व केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों को सही मार्ग दिखाना भी है।

न्यायमूर्ति गोडसे ने कहा, 'क्या हम एक ऐसे समाज में रह रहे हैं। जहां किसी को अपनी राय व्यक्त करने के लिए जेल भेज दिया जाएगा? यह सोचने वाली बात है कि क्या अब छात्रों को बोलना बंद कर देना चाहिए?' कोर्ट ने छात्रा की गिरफ्तारी को न केवल अनुचित बल्कि असंवैधानिक भी करार दिया।

जब सरकारी वकील ने तर्क दिया कि छात्रा की टिप्पणी राष्ट्रीय हितों के खिलाफ थी, तो अदालत ने इस तर्क को खारिज करते हुए कहा कि अगर किसी ने गलती की है और उसे महसूस करके माफी मांग ली है, तो उसे सुधारने का अवसर दिया जाना चाहिए। कोर्ट ने पूछा, 'सरकार क्या चाहती है कि छात्र बोलना बंद कर दें? इस तरह की प्रतिक्रियाएं समाज में और कट्टरता को जन्म देंगी।' पीठ ने कॉलेज प्रशासन को भी फटकार लगाते हुए कहा कि एक छात्रा को सुने बिना निष्कासित कर दिया। 'आपने एक छात्रा को अपराधी बना दिया, जबकि आपकी जिम्मेदारी थी कि आप उसे सुधारने का प्रयास करते,' दरअसल लड़की को उसकी परीक्षा से पहले कॉलेज से निकाल दिया गया था। सुनवाई के दौरान, अदालत ने लड़की की मानसिक और भावनात्मक स्थिति के बारे में पूछा और उसे जेल से रिहा करने का निर्देश दिया ताकि वह परीक्षा में शामिल हो सके। अदालत ने आदेश दिया कि परीक्षा अवधि के दौरान उसे पुलिस द्वारा नहीं बुलाया जाएगा।

उपरोक्त दोनों प्रकरणों से स्पष्ट होता है कि आम नागरिकों के लिए अब खुलकर अपने विचार प्रकट करना कितना दूभर होता जा रहा है। इन मामलों में अदालतों ने तो इंसाफ किया है, लेकिन नाइंसाफी की नौबत क्यों आई, क्यों सामान्यजनों को इस तरह व्यवस्था का शिकार होना पड़ रहा है, क्या लोकतंत्र लोक के लिए असुरक्षित और चंद तथाकथित खास लोगों के लिए ही सुरक्षित रह गया है, यह सोचने वाली बात है।

अहिल्याबाई के लोकहितकारी कार्यों को इतिहास हमेशा याद रखेगा: सांसद

भदोही। अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी स्मृति पखवारा के क्रम में बृहस्पतिवार को नगर पालिका स्तरीय संगोष्ठी गोपीगंज स्थित एक प्रतिष्ठान में संपन्न हुआ। संगोष्ठी का शुभारंभ मुख्य अतिथि सांसद विनोद बिन्दु, मुख्य वक्ता निवर्तमान जिलाध्यक्ष गंगा पार प्रयागराज कविता पटेल के साथ लोक माता अहिल्या बाई होलकर के तैल चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्जवलन कर किया। सांसद ने कहा कि देश अपनी प्राचीन संस्कृतिक विरासत, ज्ञान-विज्ञान व आध्यात्म की बदौलत विश्व गुरू था। मुगलकाल और अंग्रेजी शासन के दौरान इसमें गिरावट आई। अंग्रेजी शासन में भारतीय संस्कृति, घरेलू उद्योग और यहां की अर्थ व्यवस्था को नष्ट कर दिया था। प्राचीनकाल में हमारा देश सांस्कृतिक रूप से तथा ज्ञान-विज्ञान में बहुत ही समृद्ध था। नारी शक्ति को भारत मे उच्च स्थान हासिल था लेकिन मुगलकाल में हमारे समाज में सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, जौहर प्रथा, विधवा विवाह न होना, विधवा को सम्पत्ति से बेदखल करना, निसंतान स्त्री को दत्तक पुत्र लेने का अधिकार न देना जैसी अनेकों बुराइयां और कुरीतियां आ गईं। अहिल्याबाई होल्कर जी इन बुराईयों को दूर करने के लिए अथक प्रयास किया। उनका जन्म 31 मई, 1725 को महाराष्ट्र में हुआ। उन्होंने उस समय की अव्यवस्थाओं, बुराईयों और समाज की कमजोरियों को दूर करने का प्रयास किया। पति की मृत्यु के बाद विधवाओं को सम्पत्ति में अधिकार दिलाया। दुनिया में जब कहीं पर भी महिलाओं को अधिकार नहीं था उस समय अहिल्याबाई होल्कर जी हमारे देश में शासक बनी। उनका शासन व्यवस्था लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को स्थापित करता है।

उन्होंने जलाशय, बांध बनवाये, इंदौर जैसे नगर की स्थापना की। शिक्षा में भी उनका बहुत ही योगदान रहा। पहली बार अहिल्याबाई होल्कर ने युद्ध के दौरान नष्ट हुई किसानों की फसल का मुआवजा दिलाने, सैनिकों की विधवाओं को आर्थिक मदद देने, आदिवासी क्षेत्रों व सुदूर ग्रामीण इलाकों में कुटीर उद्योग लगाने, मार्केटिंग की व्यवस्था करना, महिलाओं की सुरक्षा, लड़कियों का विवाह कराना आदि व्यवस्थाएं 800 वर्ष पहले अपने शासनकाल में करायी थीं। सुशासन की प्रणेता और जनहित के कार्यों के कारण उन्हें लोकमाता की उपाधि मिली। उनके जीवन और कर्तव्य पथ से आज भी प्रेरणा मिलती है। उनका देश की सांस्कृतिक विरासत के साथ विकास में बहुत बड़ा योगदान था। मुगलकाल के दौरान सोमनाथ, काशीविश्वनाथ, द्वारिकाधीश आदि मंदिरों को नष्ट किया गया था, जिसका उन्होंने जीर्णोद्धार कराया। उन्होंने सनातन संस्कृति को समृद्ध किया, उनका जीवन नारी शक्ति का प्रतीक है। उनके प्रशासनिक कार्य, समाज सुधार, भारतीय संस्कृति एवं विरासत के लिए किया गया उनका योगदान अविस्मरणीय है। अहिल्याबाई होल्कर जी समाज, शासन एवं सुशासन के लिए आदर्श स्वरूप हैं तथा त्याग, धर्म एवं सुशासन की प्रतिमूर्ति भी हैं। वह बहुत बड़ी शिव भक्त थी। मध्य प्रदेश की प्रसिद्ध महेश्वर की साड़ी और महेश्वर बांध के निर्माण में उनका योगदान था।इस मौके पर जितेंद्र गुप्ता, चिंटू सिंह बघेल, विनय श्रीवास्तव, कुंवर प्रमोदचंद मौर्य, सिराज अख्तर, सपना दुबे, भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक मिश्रा आदि रहे।

दूध उत्पाद विशेष अभियान में खाद्य नमूने संकलित

भदोही। मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश योगी आदित्यनाथ के आदेशों का असर जनपद में खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन दिखाने लगा है। 15 दिवसीय विशेष अभियान के छठवें दिन तक छोटी-बड़ी बाजारों में दस्तक देकर नमूने दर नमूने संकलित कर मिलावटी व नकली खाद्य कारोबारियों की धड़कन बढ़ा दी।

टीम ने आश्वस्त किया कि छोटी-बड़ी बाजारों में बिक रहे संदिग्ध पनीर, दूध, देशी घी समेत अन्य खाद्य पदार्थों की रिपोर्ट विपरीत हुई तो संबंधित दुकानदारों, व्यापारियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई तय होगी। सहायक प्रभारी आयुक्त खाद्य वीके मालवीय ने कहा कि शासन के आदेश पर दूध उत्पाद संबंधित अभियान 24 मई से चल रहा है।

नौ दिन और चलने वाले उक्त अभियान में गठित टीमें शासन की मंशा पर खरा उतर कर सेहत को बिगाड़ रहे जिम्मेदारों की मंशा सफल नहीं होने दिया जाएगा और शुद्धता का अनुपालन प्राथमिकता में रहेगी। टीम में देवराज सिंह, मानवेंद्र सिंह, ओमप्रकाश सिंह शामिल रहे।

सेना में दिखने लगा महिला शक्ति का दम

रमेश सर्राफ धमोरा

भारतीय सेना में महिला शक्ति का दम दिखाई देने लगा है। पुरुषों की तरह महिलाएं भी सेना में बढ़ चढ़कर अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रही हैं। इसका ताजा उदाहरण हाल ही में सेना द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर की प्रेस ब्रीफिंग में सेना की दो महिला अधिकारियों द्वारा युद्ध से संबंधित जानकारी देना एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। विदेश सचिव विक्रम मिसरी के साथ कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर भारत के पराक्रम की तस्वीर को पूरी दुनिया के सामने पेश किया और बताया कि आखिर ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने कैसे और क्या कार्यवाही की। सेना की दोनों महिला अधिकारियों ने सैनिक कार्यवाही की हर दिन प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से देश दुनिया को ताजा जानकारी प्रदान कर यह दिखा दिया कि भारत में महिला शक्ति भी किसी से कम नहीं है।

भारत में सदियों से महिलाओं को मातृशक्ति का दर्जा दिया जाता रहा है। कहा गया है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।। अर्थातः जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता रमते हैं। जहां नारियों की पूजा नहीं होती, वहां किए गए सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं। हम देश में साल में दो बार नवरात्र पर मातृशक्ति रूपी मा दुर्गा की पूजा कर देश दुनिया को यह संदेश देते हैं कि मातृ शक्ति भी किसी से कम नहीं है। अब तो हमारी सेना में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर अपनी उत्कृष्ट क्षमता दिखा दी है। महिलाएं फाइटर प्लेन उड़ा रही है। तो युद्ध भूमि में हर प्रकार की भूमिका निभाने को तैयार नजर आ रही है। भारतीय सशस्त्र बलों में महिलाओं की भागीदारी का इतिहास लंबे संघर्ष और बदलावों से भरा रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही महिलाएं भारत की सुरक्षा और सेवा में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देती रही हैं। लेकिन सेना में औपचारिक तौर पर उनकी नियुक्ति का रास्ता बहुत बाद में खुला। साल 1943 में बनी रानी झांसी रेजिमेंट, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज का हिस्सा थी। यह पहली बार था जब महिलाएं युद्ध के मोर्चे पर सक्रिय रूप से दिखाई दी। आजादी के बाद भी सशस्त्र बलों में महिलाओं को लंबे समय तक सहायक भूमिकाओं तक ही सीमित रखा गया।

भारत की तीनों सेनाओ (थल सेना, नौसेना, वायु सेना) में महिलाओं की संख्या को लेकर अगस्त 2023 में केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री अजय भट्ट ने संसद में बताया था कि तीनों सेना में 11414 महिलाएं सेवाएं दे रही है। थल सेवा में 7054 महिलाएं सेवारत है। इनमें 1733 महिला अधिकारी है। यह आंकड़ा 1 जनवरी 2023 तक का है। भारतीय वायु सेवा में 1654 अधिकारी सेवारत है जबकि 155 महिलाएं एयर मेन (अग्निवीर) के रूप में सेवा दे रही है। भारतीय नौसेना में 580 महिलाएं अधिकारी के रूप में सेवारत है जबकि 727 महिलाएं सैलर्स (अग्निवीर) के तौर पर तैनात है।

इसी तरह 1212 महिलाएं भारतीय थल सेना के आर्मी मेडिकल कॉर्प्स में 168 महिलाएं आर्मी डेंटल कार्स में और 3841 महिलाएं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में कार्यरत है। 151 महिलाएं नौसेना के मेडिकल कॉर्प्स में 10 महिलाएं डेंटल कार्य और 380 महिलाएं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में सेवारत है। 274 महिलाएं भारतीय वायु सेवा के मेडिकल कॉर्प्स में पांच महिलाएं डेंटल कॉर्प्स में और 425 महिलाएं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में सेवारत है।

पहले महिलाओं को शार्ट सर्विस कमीशन में ही लिया जाता था। लेकिन फरवरी 2020 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद महिलाओं को सेना में स्थाई कमीशन मिलने लगा है। अब एनडीए की कुल सीटों का 10 प्रतिशत सीटों पर लड़कियां सिलेक्ट होती है और वह भी ओपन कंपटीशन में मुकाबला करके। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने मार्च 2025 में संसद में बताया था कि 2022 में महिला कैडेट्स के पहले बैच की एंट्री के बाद से अब तक एनडीए में 126 महिलाओं को एडमिशन मिला है। आर्म्ड फोर्सज में आने के बाद उनके लिए भी अवसर समान होते हैं। उनका करियर प्रोग्रेस वैसा ही होगा जैसा लड़कों का होगा। सर्विस रूट समान होते हैं। अब हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारी सेना में पूरी तरह जेंडर न्यूट्रलाइजेशन हो गया है।

सेना में आज हमारी महिला कॉम्बैट पायलट भी है। जो मिसाइल चलती है मोर्चे पर भी जाती है। वह इंजीनियरिंग का कार्य भी देखती है और सैटेलाइट को भी नियंत्रित करती है। अब महिलाएं डिफेंस भी करती है। टेक्निकल इंटेलिजेंस भी एकत्रित करती है। अभी तक आमने-सामने की लड़ाई में महिलाओं को नहीं भेजा जाता है। राजस्थान में झुंझुनू जिले की स्क्वाड्रन लीडर मोहन सिंह 2016 में भारतीय वायु सेवा की तेजस फाइटर स्पाइडर में शामिल होने वाली पहली महिला बनी। इससे पहले वह मिग 21 बाइसन फाइटर प्लेन भी उड़ा चुकी है। ग्रुप कैप्टन सालिया धामी वायु सेवा की ऐसी पहली महिला अधिकारी बनी है जो फ्रंटलाइन काम्पैक्ट यूनिट की कमान संभाल रही है। फ्लाइंग यूनिट की फ्लाइट कमांडर बनने वाली भी वह पहली महिला अधिकारी है। भारत की सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा और थलसेना एवं नौसेना की चिकित्सा सेवाओं का नेतृत्व महिला अधिकारी ही कर रही हैं।

रक्षा बलों में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने की दिशा में भारत की प्रगति धीमी रही है। लेकिन लोगों का मानना है कि इसमें लगातार प्रगति हुई है। अब एक साथ बहुत सारी महिलाएं प्रमुख भूमिकाओं में हैं। वे दूसरों के लिए रास्ता बना रही हैं। उनके प्रदर्शन पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। अगर वे अच्छा काम कर रही हैं तो उन्हें स्वीकार करना आसान होगा और आने वाली महिलाओं के लिए रास्ता साफ हो जाएगा।

शॉर्ट सर्विस कमीशन के तहत महिलाएं केवल 10 या 14 साल तक सेवाएं दे सकती हैं। इसके बाद वो सेवानिवृत्त हो जाती हैं। लेकिन अब उन्हें स्थायी कमीशन के लिए आवेदन करने का भी मौका मिलेगा। जिससे वो सेना में अपनी सेवाएं आगे भी जारी रख पाएंगी और रैंक के हिसाब से सेवानिवृत्त होंगी। साथ ही उन्हें पेंशन और सभी भत्ते भी मिलेंगे। 1992 में पांच साल के लिये शॉर्ट सर्विस कमीशन के लिए महिलाओं का पहला बैच भर्ती हुआ था। इसके बाद इस सर्विस की अवधि को 10 साल के लिए बढ़ाया गया। 2006 में शार्ट सर्विस कमीशन को 14 साल कर दिया गया। भारतीय सेना अब महिलाओं को सशत्र बल में नियुक्ति के लिए उनके लिए तय की गई नीतियों को लागू कर प्रोत्साहित करती है। इसके लिए महिलाओं के लिए आर्मी मेडिकल कोर, आर्मी डेंटल कोर और मिलिटरी नर्सिंग सेवाओं के लिए परमानेंट कमिशन को मंजूरी दी गई है।

रजिस्ट्री बैनामा को प्राइवेट हाथों में सौंपने के विरोध में उतरे अधिवक्ता

अधिवक्ताओं ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापनपत्र एसडीएम को सौंपा

भदोही। बुधवार को तहसील बार सभागार मे अधिवक्ताओ की एक बैठक हुई। जिसमे निबन्धन विभाग को प्रस्तावित निजीकरण व निबन्धन मित्र बनाये जाने के विरोध में अधिवक्तागण व वैनामा लेखक व स्टाम्प वेण्डर द्वारा तहसील में किये जा रहे प्रदर्शन को संज्ञान में लेते हुये निजीकरण प्रस्ताव व निबन्धन मित्र बनाने के प्रस्ताव को वापस लिये जाने की बाबत चर्चा की गई और फिर मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश सरकार के नाम संबोधित एक ज्ञापनपत्र एसडीएम भदोही को सौंपा गया।मुख्यमंत्री को भेजे गये ज्ञापनपत्र में अधिवक्ताओ द्वारा कहा गया है कि सरकार द्वारा रजिस्ट्री बैनामा को प्राइवेट संस्था के हाथों में हस्तान्तरित करने पर व उक्त संस्था द्वारा निबन्धन मित्र सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में बनाये जाने पर हम तहसील के सभी लोगों के सामने रोजगार की समस्या खड़ी हो जायेगी। इसलिए रजिस्ट्री कार्यालय को निजी हाथों में नही दिया जाये तथा पूर्व की भाँति रजिस्ट्री कार्यालय सरकार के अधीन ही रखा जाय। सरकार की योजना अनुसार निबन्धन मित्र के प्रस्ताव को वापस लिया जाये। हम सभी अधिवक्तागण व वैनामा लेखकों व स्टाम्प विक्रेताओं को बीस हजार रुपए प्रतिमाह गुजारा भत्ता सरकार द्वारा दिया जाये। हम सभी बैनामा लेखन कार्य करने वालों को लैपटॉप सरकार को यथाशीघ्र दिलाया जाय।

ज्ञापन पत्र सौंपने वालों में अध्यक्ष रामनिवास यादव, महासचिव गौरव जादौन, सुनील दीक्षित, विष्णुगोपाल दीक्षित, सुनील यादव,विनोद उपाध्याय, सुरेन्द्र पचौरी, पुरुषोत्तम सिंह यादव, रामप्रकाश सिंह, प्रमोद पचौरी, रमेश पाल सिंह, प्रमोद राठी,सुदीप पाठक,रामदेव सिंह, लायक सिंह यादव, सुरेन्द्रदेव पाठक, केपी सिंह, सुभाष राजपूत, विजय कुमार सिंह, जीवेन्द्र प्रताप सिंह,दयाराम यादव, द्विजेन्द्र यादव, युवराज सिंह,अनिल यादव,राहुल यादव आदि अनेक अधिवक्ता प्रमुख थे।

जेल से जच्चा-बच्चा वार्ड तक- महिला आयोग सदस्य ने खंगाली चित्रकूट की हकीकत

● स्वावलंबन, सुरक्षा व स्वास्थ्य पर एक साथ चोट ● सेवाएं पाई गईं संतोषजनक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राज्य महिला आयोग उत्तर प्रदेश की सदस्य श्रीमती प्रतिभा कुशवाहा ने अपने द्वितीय प्रवास दिवस पर चित्रकूट में प्रशासनिक और सामाजिक व्यवस्थाओं का गहन निरीक्षण कर सबको चौंका दिया। सुबह 9 बजे जिला प्रोबेशन अधिकारी पंकज कुमार मिश्रा की उपस्थिति में सबसे पहले जिला कारागार रगोली का निरीक्षण किया गया, जहां महिला बैरक की व्यवस्था संतोषजनक पाई गई। जेल में क्रेच, सप्ताह में एक बार पीसीओ से घरवालों से बात करने की सुविधा और अनपढ़ महिला कैदियों को वनागना एनजीओ द्वारा हस्ताक्षर करना, पेंटिंग सिखाने की व्यवस्था सराहनीय रही। निरीक्षण में यह तथ्य भी सामने आया कि अधिकांश महिलाएं दहेज उत्पीड़न के मामलों में बंद हैं। भोजन की व्यवस्था पुरुष जेल की पाठशाला से की जा रही है। मैडम ने महिला बंदियों के लिए सेनेटरी पैड डिस्ट्रॉय मशीन तथा

आरसेटी दौरे में कर्मचारियों के साथ महिला आयोग सदस्य

स्टडी स्मार्ट बोर्ड जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। इसके बाद कसहई स्थित आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण किया, जहां आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से संवाद कर महिलाओं की सुरक्षा, आत्मनिर्भरता और उनकी समस्याओं के बारे में विस्तार से जाना। फिर शिवरामपुर के आरसेटी में चल रहे कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम का जायजा लिया, जहां प्रशिक्षण प्राप्त कर रही बालिकाओं को प्रोत्साहित करते हुए ब्यूटीशियन कोर्स से जुड़ी छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इसके पश्चात संयुक्त जिला अस्पताल का निरीक्षण किया गया, जिसमें पीएनसी वार्ड, महिला वार्ड, जच्चा-बच्चा वार्ड और इमरजेंसी वार्ड शामिल रहे। व्यवस्थाएं पूर्व निरीक्षण की तुलना में बेहतर पाई गईं, लेकिन मैडम ने साफ-सफाई और मरीजों की सुविधाओं के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। आकांक्षा कैंटीन में एनआरएलएम समूह की महिला मानती देवी से मुलाकात कर उन्होंने महिला समूहों की भूमिका की सराहना की, साथ ही आकांक्षा स्टोर में सफाई व्यवस्था सुधारने के निर्देश भी दिए। अंतिम पड़ाव रहा वन स्टॉप सेंटर गढीव़ा, जहां सभी व्यवस्थाएं सुव्यवस्थित पाई गईं। इसमें सभी स्थलों पर संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे और निरीक्षण में सक्रिय भागीदारी निभाई।

भीषण बाइक टक्कर में घायल युवकों को समय रहते पहुंचाया अस्पताल

कर्वी (चित्रकूट)। थाना कर्वी क्षेत्र में मंगलवार को दो बाइकों की आमने-सामने भिड़ंत में दो युवक गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर तड़पते रह गए। मौके पर अफरा-तफरी मच गई, परंतु स्थानीय लोग कुछ समझ पाते, उससे पहले पीआरवी 2030 के सतर्क पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे और तत्काल मानवता की मिसाल पेश करते हुए दोनों घायलों को पीआरवी वाहन से अस्पताल पहुंचाया। घटनास्थल पर घायल युवक खून से लथपथ हालत में बेसुध पड़े थे। समय पर इलाज नहीं मिलता, तो बड़ी अनहोनी से इनकार नहीं किया जा सकता था। मगर पीआरवी 2030 के जवान न सिर्फ समय पर पहुंचे, बल्कि बिना देरी किए उन्हें अस्पताल में भर्ती कराकर उनकी जान बचा ली।

सिरावल समर कैंप में रचनात्मकता बिखेरते बच्चे

चित्रकला, योग और रंगोली में निखर रही बेटियाँ

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजकीय हाईस्कूल सिरावल इन दिनों ग्रीष्म की तपती दोपहरों में भी सृजन, ऊर्जा और उत्साह से सराबोर है। सुबह 7 बजे से 10 बजे तक चल रहे समर कैंप ने स्कूल परिसर को रचनात्मक गतिविधियों का जीवंत मंच बना दिया है, जहां छात्राएं योगाभ्यास और व्यायाम से दिन की शुरूआत कर रही हैं और फिर चित्रकला, पेपर कैशे, लोकगीत, नाटक, म्यूजिकल चेयर और रस्साकशी जैसी गतिविधियों में पूरे जोश से भाग ले रही हैं। यह समर कैंप न सिर्फ मनोरंजन का माध्यम बना है, बल्कि छात्राओं के व्यक्तित्व विकास और सृजनशीलता को भी नई उड़ान दे रहा है। प्रधानाचार्या डॉ मोनिका यादव ने बताया कि समर कैंप में छात्राओं को पेपर कैशे व चित्रकला की बारीकियां सिखाई जा रही हैं। साथ ही पर्यावरण के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय परिसर में मोनिका गार्डन विकसित किया गया है, जिसे सैकड़ों फूलदार और फलदार पौधों से सजाया गया है। इस कार्य में स्कूल की शिक्षिकाएं और छात्र-छात्राएं मिलकर भागीदारी निभा रहे हैं। डॉ यादव ने बताया कि छात्राओं ने न केवल रंगोली में अपनी अद्भुत प्रतिभा दिखाई, बल्कि सांस्कृतिक गतिविधियों में भी वह पूरे उत्साह से आगे आई हैं। समर कैंप को जीवंत और प्रभावी बनाने में सहायक शिक्षिका श्रीमती अंकिता पाण्डेय का विशेष योगदान रहा है। उन्होंने बच्चों को गतिविधियों की बारीकियों से परिचित कराया और उनके मार्गदर्शन में छात्राओं ने एक से बढ़कर एक रंगोली बनाई, जो स्कूल परिसर को रंगों की सुंदरता से भर रही है। डॉ मोनिका यादव और श्रीमती अंकिता पाण्डेय ने शिक्षिका के साथ-साथ खेल शिक्षिका की भूमिका भी निभाई और हर गतिविधि में बच्चों को न केवल प्रेरित किया, बल्कि उनके साथ सहभागी बनकर उदाहरण प्रस्तुत किया।

गुरु के वचन, सेनापति का प्रण, आतंक पे होगा अब प्रचण्ड रण

जगद्गुरु ने माँगा पीओके, सेनाध्यक्ष ने कहा दक्षिणा निश्चित मिलेगी

जहाँ मंत्र बने संकल्प, वहाँ विजय बने धर्म

चित्रकूट। शब्द जहाँ मौन को भी संकल्प बना दें, वहीं राष्ट्रधर्म की गूंज आत्मा तक पहुँचे- ऐसा ही दृश्य बुधवार की संध्या तुलसी पीठ में दृष्टिगोचर हुआ। भारतीय थल सेना के प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी जब अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता द्विवेदी संग पद्मविभूषण जगद्गुरु रामभद्राचार्य के चरणों में पहुंचे, तो वह केवल एक औपचारिक भेंट नहीं, अपितु राष्ट्रधर्म की एक नयी वेला का प्रारंभ था। जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने जगद्गुरु से दीक्षा ग्रहण करते हुए संकल्प लिया कि ऑपरेशन सिंदूर तब तक नहीं रुकेगा, जब तक आतंक का अंतिम बीज नष्ट न कर दिया जाए। स्पष्ट किया कि भारत पर किसी भी प्रकार के हमले का उत्तर इतना करारा होगा कि इतिहास उसे प्रतिशोध नहीं, धर्मयुद्ध कहेगा। इस पावन भेंट में जगद्गुरु ने भारतीय सेना के पराक्रम की मुक्तकंठ से प्रशंसा की और सेना प्रमुख को एक

सेनाध्यक्ष को विशेष गदा देते जगदगुरू

विशेष गदा प्रदान करते हुए आशीर्वाद दिया- यही गदा बने उस विजय का प्रतीक, जो आतंक और अन्याय को चूर कर दे। वहीं, थल सेना प्रमुख ने भी जगद्गुरु को सेना का स्मृति-चिह्न अर्पित किया। यह गुरु-शिष्य परंपरा का अनुपम संगम था, जहाँ आध्यात्मिकता और राष्ट्रशक्ति का संगम गंगा-जमुनी भावभूमि पर घटित हुआ। जगद्गुरु ने पत्रकारों से बातचीत में बताया कि उन्होंने गुरु दक्षिणा में पीओके माँगा, जिस पर सेनाध्यक्ष ने दृढ़ता से कहा- यह दक्षिणा अवश्य प्राप्त होगी। जगद्गुरु ने यह भी बताया कि दीक्षा का वही मंत्र दिया गया, जो माता सीता ने हनुमान को लंका विजय हेतु प्रदान किया था।

घाटों पर उतरा जन-मन का जोश, स्वच्छता में दिखा श्रद्धा का घोष

● नगर पालिका का स्वच्छता महासंग्राम ● लोकमाता की 300वीं जयंती

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में पुण्य लोक अहिल्या बाई होलकर की 300वीं जन्म शताब्दी के पावन मौके पर नगर पालिका परिषद ने मां मंदाकिनी नदी के पुल घाट पर एक भव्य महा सफाई अभियान का आयोजन किया। यह कार्यक्रम केवल घाटों की सफाई तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह जनचेतना, आस्था और पर्यावरण प्रेम का प्रतीक बनकर उभरा। अभियान का नेतृत्व नगर पालिका अध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता, मुख्य अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष महेंद्र कोटार्य, अधिशासी अधिकारी लाल जी तथा सभासदगण व स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों ने संयुक्त रूप से किया। सभी ने फावड़े और झाड़ू हाथ में लेकर घाटों पर स्वच्छता का संदेश दिया और आमजन को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। मुख्य अतिथि महेंद्र कोटार्य ने कहा कि स्वच्छ वातावरण से न केवल पर्यावरण शुद्ध होता है, बल्कि एक स्वस्थ समाज की नींव भी पड़ती है। कहा कि जब समाज स्वच्छ होता है, तभी भारत स्वस्थ बनता है। वहीं नगर पालिका अध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता ने कहा कि नगर की सफाई के साथ-साथ हमें नदियों और तालाबों की भी नियमित सफाई करनी चाहिए। अपील की कि मां मंदाकिनी में गंदगी न फैलाएं, नदी में स्नान करते समय तेल और शैंपू का प्रयोग बिल्कुल न करें। साथ ही घरों का कूड़ा इधर-उधर फेंकने के बजाय निर्धारित कूड़ा गाड़ियों में डालने की आदत डालें। इस स्वच्छता अभियान में अधिशासी अधिकारी लाल जी, सफाई एवं खाद्य निरीक्षक कमलाकांत शुक्ला, स्वच्छ भारत मिशन के जिला कार्यक्रम प्रबंधक शिवा कुमार, तथा सभासद शंकर प्रसाद यादव, राजकमल

नदी किनारे सफाई में लिप्त नगर पालिका कर्मचारी

वर्मा, राजेश सिंह पटेल, शुभम केशरवानी के साथ-साथ सफाई नायक अमित कुमार, श्रवण कुमार, दुलीचंद्र मौजूद रहे।

नारी का तेज, अहिल्या का सार, भाजपा करे शक्ति का जयजयकार

लोकमाता की जयंती पर नारी का सम्मान करते पूर्व मंत्री

● भाजपा ने गाया लोकमाता की लेखा

● भाजपा की नारीशक्ति यात्रा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भारतीय जनता पार्टी चित्रकूट ने पुण्यश्लोक लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के मौके पर ब्लॉक सभागार में महिला सशक्तिकरण सम्मेलन का आयोजन किया। मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय, विशिष्ट अतिथि जिलाध्यक्ष महेन्द्र कोटार्य और अध्यक्षता ब्लॉक प्रमुख गोमती पटेल ने की। इसी क्रम में जिले के चार अन्य ब्लॉकोंकृमऊ, मानिकपुर, पहाड़ी व रामनगर- में भी महिला सशक्तिकरण सम्मेलन किए गए। मऊ में दिनेश तिवारी, मानिकपुर में चन्द्रप्रकाश खरे, पहाड़ी में रंजना उपाध्याय और रामनगर में गंगाधर मिश्र मुख्य अतिथि रहे। कर्वी कार्यक्रम में संयोजक हरिओम करवरिया, जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय और मीडिया प्रभारी भागवत त्रिपाठी की सक्रिय सहभागिता रही। सम्मेलन में जिलाध्यक्ष कोटार्य ने लोकमाता अहिल्याबाई को भारत की सांस्कृतिक पुनरुत्थान की आधारशिला बताया। कहा कि मुगल अराजकता के बीच लोकमाता ने मंदिरों का पुनर्निर्माण कर भारत की आत्मा को फिर से जीवित किया। उनके कार्य आज मोदी और योगी सरकारों की योजनाओं में परिलक्षित हो रहे हैं। पूर्व मंत्री उपाध्याय ने कहा कि काशी विश्वनाथ से केदारनाथ तक मंदिरों का जीर्णोद्धार लोकमाता की सनातन धर्म के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है। गोमती पटेल ने लोकमाता को एक नीति-संयमित, राज्यप्रथम भाव की राजनेत्री बताया। संचालन कर रहे आलोक पाण्डेय ने कहा कि भाजपा की डबल इंजन सरकारें लोकमाता के पदचिन्हों पर चलते हुए महिला, युवा और किसान कल्याण को प्राथमिकता दे रही हैं। मीडिया प्रभारी त्रिपाठी ने लोकमाता के जीवन-दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। आभार संयोजक हरिओम करवरिया ने व्यक्त किया। सम्मेलन में दर्जनों जनप्रतिनिधियों, भाजपा कार्यकताओं व महिलाओं की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही।

विशेष सचिव करेंगे रामनगर का स्थलीय निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

● 50 सूचकांकों पर कसेगी नकेल

● रामनगर के विकास का अग्निपरीक्षण

● 60 पुराने, 8 नए- कुल 108 फेलो मैदान में

चित्रकूट। उत्तर प्रदेश सरकार के आकांक्षात्मक विकास खंडों में शुमार रामनगर अब विकास कार्यों की असली कसौटी पर परखा जाने वाला है। सीएम योगी आदित्यनाथ की शीर्ष प्राथमिकता में शामिल इस अभियान में विशेष सचिव स्तर के अधिकारी स्वयं क्षेत्र में उतरकर तीन दिवसीय स्थलीय निरीक्षण करेंगे। यह निरीक्षण औपचारिकता नहीं बल्कि जमीनी सच्चाई को परखने की एक सख्त कार्यवाही मानी जा रही है, जिसमें स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, कृषि जैसे क्षेत्रों से जुड़े कुल 50 इंडिकेटर्स की गहन समीक्षा की जाएगी। मुख्यमंत्री ने हाल ही में की गई समीक्षा बैठक के बाद यह निर्देश दिया कि आकांक्षात्मक ब्लॉकों में अब कागजी विकास नहीं, बल्कि वास्तविक परिवर्तन दिखना चाहिए। इसी क्रम में शासन ने आदेश जारी किया है कि विशेष सचिव स्तर के अधिकारी निरीक्षण से पूर्व एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लें, ताकि क्षेत्र में जाकर योजनाओं की प्रभावशीलता और उनके क्रियान्वयन की वस्तुस्थिति का मूल्यांकन करें। इस निरीक्षण में हर पहलू की बारीकी से पड़ताल की जाएगी- कहीं योजनाएं फाइलों में तो नहीं सिमटी रहीं, कहीं बजट बिना जमीन पर काम किए खर्च तो नहीं हुआ, और क्या सरकारी प्रयासों से आम जनमानस को कोई वास्तविक लाभ हुआ भी या नहीं। प्रदेश सरकार ने युवाओं को नीति-निर्माण, प्रबंधन व अनुश्रवण जैसे कार्यों में भागीदार बनाने को वर्ष 2022 से सीएम फेलोशिप कार्यक्रम किया जा रहा है। जिसमे चयनित शोधार्थी आकांक्षात्मक विकास खण्डों में कार्यरत रहकर न केवल निर्धारित सूचकांकों की प्रगति का मूल्यांकन करते हैं, बल्कि योजनाओं की जमीनी हकीकत भी सरकार तक पहुंचाते हैं खंड विकास अधिकारी रामनगर वसीम निजामी खां ने बताया कि शासन से निरीक्षण के संबंध में पत्र प्राप्त हो चुका है और ब्लॉक स्तर पर तैयारियां भी पूरी कर ली गई हैं। हालांकि अब तक यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि निरीक्षण किस ग्राम पंचायत अथवा मजरे में होगा और विशेष सचिव किस गांव में रात्रि प्रवास करेंगे।

चित्रकूट के गौरव दिनेश दीक्षित संघर्षी का काव्यपाठ आज होगा प्रसारित

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले की पावन भूमि से हिन्दी काव्य-जगत को एक नया आयाम देने वाले ख्यातिनाम युवा कवि दिनेश दीक्षित संघर्षी के काव्यपाठ का प्रसारण 30 मई, शुक्रवार की रात 9:30 बजे आकाशवाणी छतरपुर से रसावतरण कार्यक्रम में होने जा रहा है। इस प्रसारण को लेकर न केवल चित्रकूट, बल्कि देशभर में फैले उनके श्रोताओं और काव्यप्रेमियों में विशेष उत्साह का माहौल है। संघर्षी नाम के अनुरूप दिनेश दीक्षित न केवल शब्दों के सशक्त योद्धा हैं, बल्कि मंचों पर अपनी ओजस्वी उपस्थिति से समाज की सोच को झकझोरने वाले कवि भी हैं। हास्य, व्यंग्य, श्रृंगार और ओजकृ इन सभी रसों में पारंगत इस कवि की पहचान गीत, मुक्तक और छंद के शानदार संयोजन से होती है। आज जब मंचीय कविता अक्सर सतही हो चली है, ऐसे समय में संघर्षी जैसे कवि गहराई और गंभीरता के प्रतीक बनकर उभरते हैं। कल के प्रसारण को लेकर उनके प्रशंसकों में इंतजार की लहर है। निश्चित ही यह काव्यप्रेमियों के लिए एक दुर्लभ और रचनात्मक अनुभव होगा, जो न केवल शब्दों का रस देगा बल्कि चेतना को भी आंदोलित करेगा। कल रात 9:30 बजे- सुनिए, चित्रकूट की मिट्टी से निकली वह आवाज जो आज पूरे देश में गूंज रही है।

चित्रकूट के गौरव दिनेश दीक्षित संघर्षी

पनामा में शशि थरूर का प्रतिनिधिमंडल, राष्ट्रपति से की मुलाकात, आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई का किया समर्थन

पनामा सिटी। कांग्रेस सांसद शशि थरूर के नेतृत्व में एक सर्वदलीय भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल पनामा के दौरे पर हैं। इस बीच, पनामा के राष्ट्रपति जोस राउल मुलिनो क्विंटेरो ने गुरुवार (भारतीय समयानुसार) को कांग्रेस सांसद शशि थरूर के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक में भारत के आतंकवाद के खिलाफ दृढ़ रुख का समर्थन किया।

यह बैठक पनामा सिटी के राष्ट्रपति भवन में हुई और यह भारत के वैश्विक प्रयासों में एक महत्वपूर्ण क्षण था, जिसमें सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने का लक्ष्य था।

थरूर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, "भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने आज दोपहर पनामा के राष्ट्रपति जोस राउल मुलिनो क्विंटेरो के साथ उनके भवन में रचनात्मक और उपयोगी चर्चा की। राष्ट्रपति ने आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई के लिए समर्थन व्यक्त किया।"

इस प्रतिनिधिमंडल में विभिन्न दलों के सांसद शामिल थे, जो इस मुद्दे पर राष्ट्रीय सहमति को दर्शाते हैं। इनमें लोक जनशक्ति पार्टी (राम विलास) की शांभवी, झारखंड मुक्ति मोर्चा के सरफराज अहमद, शिवसेना के मिलिंद मुरली देवड़ा, बीजेपी के शशांक मणि त्रिपाठी, भुवनेश्वर कलिता, तेजस्वी सूर्या और तेलुगू देशम पार्टी के जीएम हरीश बालयोगी शामिल थे।

राष्ट्रपति के साथ बैठक के अलावा प्रतिनिधिमंडल ने पनामा के विदेश मंत्री जेवियर मार्टिनेज-आचा और उप-मंत्री कार्लोस होयोस के साथ चर्चा की। मुख्य विषयों में ह्यऑपरेशन सिंदूरह्ल और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए भारत का संकल्प शामिल था।

थरूर ने एक्स पर लिखा, "आज पनामा के विदेश मंत्रालय में विदेश मंत्री जेवियर मार्टिनेज-आचा के साथ उत्कृष्ट और रचनात्मक बातचीत हुई, जिसके बाद दोपहर के भोजन पर चर्चा हुई। उनके साथ उप-मंत्री कार्लोस होयोस और दो सांसद भी थे, जो भारत के प्रति सम्मान को दर्शाता है।"

पूर्व भारतीय राजनयिक तरनजीत सिंह संधू भी इस प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा हैं। उन्होंने एक्स पर लिखा, "पनामा सिटी के राष्ट्रपति भवन में पनामा के राष्ट्रपति जोस राउल मुलिनो के साथ भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल की उपयोगी बैठक हुई। विदेश मंत्री जेवियर मार्टिनेज-आचा वास्केज और वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। राष्ट्रपति ने भारत के लिए पनामा के समर्थन और आतंकवाद के विरोध को रेखांकित किया।"

इस यात्रा के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने पनामा विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की और उनकी स्मृति में एक आम का पौधा लगाया। भारतीय प्रवासी समुदाय के सदस्य भी इस समारोह में मौजूद थे और उन्होंने प्रतिनिधिमंडल के साथ बातचीत की।

सुप्रिया सुले के प्रतिनिधिमंडल ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय प्रवासियों से मुलाकात की

जोहान्सबर्ग। लोकसभा सांसद सुप्रिया सुले के नेतृत्व में एक सर्वदलीय भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत की, जिसमें आतंकवाद के खिलाफ भारत के मजबूत और एकीकृत रुख की पुष्टि की गई। दक्षिण अफ्रीका स्थित भारतीय उच्चायोग ने एक्स हैंडल पर इसकी जानकारी देते हुए लिखा, " सांसद सुप्रिया सुले के नेतृत्व में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के साथ बातचीत की। उन्होंने आतंकवाद के सभी रूपों के खिलाफ भारत की राष्ट्रीय सहमति और सामूहिक संकल्प पर जोर दिया। आतंकवाद को मिटाने के लिए भारतीय प्रवासियों ने समर्थन की सराहना की।"

प्रिटोरिया में भारतीय उच्चायोग की प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, प्रतिनिधिमंडल ने सीमा पार आतंकवाद के प्रति भारत की शून्य-सहिष्णुता नीति से अवगत कराया और क्षेत्रीय

तनाव को बढ़ाए बिना आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए देश की प्रतिबद्धता को दोहराया।

भारतीय पक्ष ने सीमापार आतंकवाद के प्रति नई दिल्ली की "जीरो टॉलरेंस नीति" पर जोर दिया और बताया कि "ऑपरेशन सिंदूर सुनियोजित, लक्षित और आनुपातिक था, जो तनाव बढ़ाए बिना आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दिखाता है।" प्रतिनिधिमंडल ने समुदाय को ह्यऑपरेशन सिंदूरह्ल के बारे में जानकारी दी, जो एक आतंकवादी घटना के लिए भारत की हाल की संतुलित प्रतिक्रिया है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा के लिए देश के दृढ़ लेकिन संतुलित नजरिए को दिखाती है।

सांसदों ने भारत के खिलाफ दशकों से इस्तेमाल किए जा रहे आतंकवादी ढांचे को खत्म करने के महत्व पर जोर दिया और आतंकवादियों और उनके प्रायोजकों के बीच अंतर करने के वैश्विक अंत का आह्वान किया। यात्रा के पहले दिन प्रतिनिधिमंडल का स्वागत उच्चायुक्त प्रभात कुमार ने किया और उन्हें भारत-दक्षिण अफ्रीका द्विपक्षीय संबंधों और आगामी कार्यक्रमों के प्रमुख आयामों के बारे में जानकारी दी।

प्रतिनिधिमंडल 28 मई (बुधवार) को केप टाउन में अपनी दक्षिण अफ्रीका यात्रा जारी रखेगा, जहां दक्षिण अफ्रीकी संसद के सदस्यों और सरकारी मंत्रियों के साथ बैठकें करने की योजना है। प्रतिनिधिमंडल में विभिन्न राजनीतिक दलों के सांसद शामिल हैं।

इसमें लोकसभा सांसद सुप्रिया सुले, राजीव प्रताप रूडी, विक्रमजीत सिंह साहनी, मनीष तिवारी, अनुराग सिंह ठाकुर, लवू श्री कृष्ण देवरायलु, आनंद शर्मा (पूर्व वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री), वी. मुरलीधरन (पूर्व विदेश राज्य मंत्री) और सैयद अकबरुद्दीन (संयुक्त राष्ट्र में भारत के पूर्व स्थायी प्रतिनिधि) हैं।

दक्षिण कोरिया में राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान शुरू

सोल। दक्षिण कोरिया में राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान गुरुवार को शुरू हो गया। देशभर में 3,568 मतदान केंद्रों पर लोग वोट डाल रहे हैं। यह चुनाव पूर्व राष्ट्रपति यूं सूक येओल का उत्तराधिकारी चुनने के लिए हो रहा है। येओल को मार्शल लॉ लागू करने की नाकाम कोशिश के कारण राष्ट्रपति पद से हटा दिया गया था।

राष्ट्रीय चुनाव आयोग (एनईसी) के अनुसार, दो दिन तक चलने वाला यह मतदान शुक्रवार को सुबह 6 बजे शुरू होगा और शाम 6 बजे तक चलेगा।

मतदान के पहले दो घंटों में सुबह 8 बजे तक 2.24 प्रतिशत मतदान हुआ।

योनहाप समाचार एजेंसी के मुताबिक, फिलहाल राष्ट्रपति पद के लिए छह उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं। बुधवार को जारी ताजा सर्वेक्षण के मुताबिक, डेमोक्रेटिक पार्टी (डीपी) के उम्मीदवार ली जे-म्यांग 49.2 प्रतिशत वोटों के

साथ सबसे आगे हैं। पीपल पावर पार्टी के किम मून-सू को 36.8 प्रतिशत समर्थन मिला है और वह दूसरे स्थान पर हैं। न्यू रिफॉर्म पार्टी के ली जुन-सोक 10.3 प्रतिशत वोटों के साथ तीसरे स्थान पर हैं।

नए राष्ट्रपति का पांच साल का कार्यकाल चुनाव के तुरंत बाद शुरू हो जाएगा।

डीपी के ली गुरुवार सुबह 10 बजे पश्चिमी सोल के सिनचोन इलाके में वोट डालेंगे। वहीं, किम अपने चुनावी दौरे के दौरान इंचियोन के ग्यायांग जिले में मतदान करेंगे।

इस बीच, सोल मेट्रोपॉलिटन पुलिस एजेंसी ने बुधवार को बताया कि वह 3 जून को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतपेटियों की सुरक्षा और परिवहन में मदद करने के लिए करीब 6,400 सशस्त्र पुलिसकर्मी तैनात करेगी।

इसका मकसद मतदान में गड़बड़ी को लेकर उठ रहे विवादों को शांत करना है।

विदेशी राजदूतों की पत्नियों ने चीनी ओपेरा का आनंद उठाया

बीजिंग। हाल में राष्ट्रीय चीनी रंगमंच कला अकादमी में एक विशेष सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। चीन स्थित 19 देशों और यूरोपीय संघ के राजदूतों की पत्नियों ने कार्यक्रम में पूर्वी सौंदर्यशास्त्र का खूब आनंद उठाया।

पूर्वाभ्यास कमरे में राजदूतों की पत्नियां विद्यार्थियों के दैनिक बुनियादी प्रशिक्षण की कक्षा में उपस्थित हुईं। बताते हैं कि मंच पर एक मिनट का प्रदर्शन करने के लिए मंच से बाहर दस साल की कड़ी मेहनत की जरूरत होती है। विद्यार्थियों ने किक मारने, झुकने और कलाबाजी करने आदि अभ्यास किया। राजदूतों की पत्नियों ने करीब से ओपेरा कलाकारों की मेहनत और दृढ़ता को महसूस किया।

कार्यक्रम में पेइचिंग ओपेरा, हनान ओपेरा और सछवान ओपेरा का प्रदर्शन किया गया। दर्शकों से गर्मजोशी से तालियां बटोरीं।

आइसलैंड के राजदूत की पत्नी डोमिनिक इब्सन ने कहा कि हमें चीनी ओपेरा के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिली, जैसे कि मार्शल आर्ट आसन, गायन तरीका और पारंपरिक इशारे आदि।

कार्यक्रम में सबसे दिलचस्प हिस्सा इंटरैक्टिव अनुभव है। अध्यापक ने चीनी ओपेरा में महिला पात्र की कलात्मक विशेषता और प्रदर्शन कौशल की व्याख्या की। राजदूतों की पत्नियों ने पोशाक पहनते हुए फोल्डिंग पंखा उठाकर चीनी ओपेरा में निहित पारंपरिक चीनी सौंदर्यशास्त्र को महसूस किया।

टूट गई एलॉन मस्क और ट्रंप की जोड़ी, टेस्ला सीईओ ने दिया सलाहकार पद से इस्तीफा

वाशिंगटन। एलन मस्क ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के वरिष्ठ सलाहकार के रूप में अपनी भूमिका से हटने की घोषणा की है, जिससे सरकारी दक्षता विभाग (डीओजीई) के साथ विशेष सरकारी कर्मचारी के रूप में उनका कार्यकाल समाप्त हो जाएगा।

टेस्ला और स्पेसएक्स के प्रमुख और अरबपति उद्यमी एलन मस्क को संघीय नौकरशाही को सुव्यवस्थित करने और बेकार सरकारी खर्च को कम करने के प्रयासों का नेतृत्व करने का काम सौंपा गया था।

बुधवार को एक्स पर हुए मस्क ने अपनी बात रखी। उन्होंने सेवा का अवसर देने के लिए आभार जताया। मस्क ने लिखा, "विशेष सरकारी कर्मचारी के रूप में मेरा निर्धारित कार्यकाल समाप्त हो रहा है, ऐसे में मैं राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को सरकारी खर्च को कम करने के दिए गए अवसर के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं।"

उन्होंने कहा, "डीओजीई मिशन समय के साथ और मजबूत होता जाएगा।"

मस्क की यह घोषणा ट्रंप के विधायी एजेंडे की आधारशिला की सार्वजनिक रूप से आलोचना करने के ठीक एक दिन बाद आई है।

सीबीएस के साथ एक साक्षात्कार में टेस्ला के सीईओ मस्क ने ट्रंप की ओर से कहे गए "बड़े सुंदर विधेयक" पर निराशा व्यक्त की, जिसमें व्यापक कर कटौती के साथ-साथ कठोर आव्रजन प्रवर्तन का प्रावधान

है।

इस विधेयक को "बहुत बड़ा व्यय विधेयक" बताते हुए मस्क ने कहा कि यह उनके विभाग के लक्ष्यों के विपरीत है।

उन्होंने कहा, "इससे संघीय घाटा बढ़ता है और डीओजीई का काम कमजोर होता है।" बिल की ब्रांडिंग पर कटाक्ष करते हुए मस्क ने कहा, "मुझे लगता है कि एक बिल बड़ा भी हो सकता है और सुंदर भी। लेकिन मुझे नहीं पता कि यह दोनों भी हो सकता है या नहीं।"

ट्रंप ने बुधवार को ओवल ऑफिस में पत्रकारों के साथ संक्षिप्त बातचीत के दौरान मस्क की आलोचना का जवाब दिया। विधेयक का बचाव करते हुए ट्रंप ने विधेयक पर बातचीत करने में आने वाली चुनौतियों को स्वीकार किया।

उन्होंने कहा, "मैं इसके कुछ पहलुओं से खुश नहीं हूं, लेकिन मैं इसके अन्य पहलुओं से रोमांचित हूं।" उन्होंने सुझाव दिया कि विधेयक में अभी भी संशोधन हो सकते हैं। उन्होंने कहा, "हम देखेंगे कि क्या होता है। इसे अभी बहुत आगे जाना है।"

शहबाज ने सार्वजनिक रूप से भारत से पिटने की बात स्वीकारी

पाकिस्तान

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने माना है कि 9-10 मई की रात को जब भारत ने रावलपिंडी के हवाई अड्डे सहित प्रमुख सैन्य ठिकानों पर हमला करने के लिए ब्रह्मोस मिसाइलों का प्रक्षेपण किया। उनकी सेना को इस बात का अंदाजा नहीं था। अजरबैजान में एक कार्यक्रम में बोलते हुए शरीफ ने कहा कि असीम मुनीर के नेतृत्व वाली सेना ने 10 मई को सुबह की नमाज के बाद भारत पर हमला करने की योजना बनाई थी। हालांकि, प्रधानमंत्री ने कहा कि भोर से पहले ही लंबी दूरी की सुपरसोनिक ब्रह्मोस क्रूज मिसाइलों ने पाकिस्तान के विभिन्न प्रांतों पर

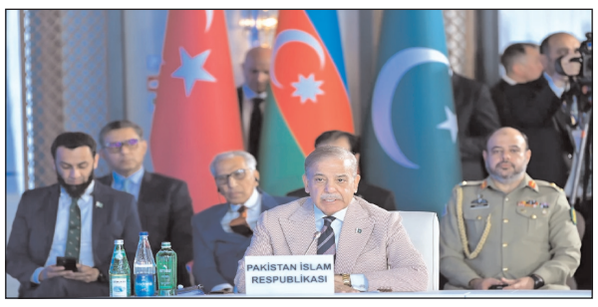

हमला कर दिया। शरीफ ने कहा कि उन्हें सुबह-सुबह हुए हमले की जानकारी मुनीर ने दी, जिन्हें अब फील्ड मार्शल के पद पर पदोन्नत किया गया है।

शरीफ ने लचिन में अपने भाषण के दौरान कहा कि 10 मई की रात को हमने भारतीय आक्रामकता का जवाब नपे-तुले अंदाज में देने का फैसला किया। हमारे सशस्त्र बल सुबह फज्र की नमाज के बाद 4.30 बजे कार्रवाई करने के लिए तैयार थे, ताकि सबक सिखाया जा सके। लेकिन उस समय से पहले ही भारत ने एक बार फिर ब्रह्मोस का इस्तेमाल करते हुए मिसाइल हमला किया, जिसमें रावलपिंडी के हवाई अड्डे सहित पाकिस्तान के विभिन्न प्रांतों को निशाना बनाया गया। भारत की सैन्य प्रतिक्रिया के बारे में प्रधानमंत्री की दुर्लभ स्वीकृति असीम मुनीर की मौजूदगी में आई।

रावलपिंडी स्थित नूर खान एयरबेस उन 11 सैन्य स्थलों में से एक था, जिन्हें भारत ने पाकिस्तान द्वारा पश्चिमी सीमा पर नागरिक क्षेत्रों पर ड्रोन और मिसाइल हमलों के जवाब में रावलपिंडी में पाकिस्तानी सेना मुख्यालय से कुछ ही दूरी पर स्थित इस एयरबेस में लॉकहीड सी-130 हरक्यूलिस और इल्यूशिन आईएल-78 रिफ्यूलर जैसे शीर्ष सैन्य विमान मौजूद हैं।

सी919 के मार्ग नेटवर्क ने चीन के 16 शहरों को कवर किया

बीजिंग। घरेलू स्तर पर उत्पादित बड़े विमान सी919 के वाणिज्यिक परिचालन की दूसरी वर्षगांठ है। पिछले सप्ताह, सी919 ने शांगहाई से शनचन और श्यानमन तक दो नए मार्ग खोले हैं। वर्तमान में सी919 के मार्ग नेटवर्क ने चीन के 16 शहरों को कवर किया है।

श्यानमन के सी919 मार्ग नेटवर्क में शामिल होने के साथ, सी919 की सेवा का दायरा पिछले दो वर्षों में मुख्य भूमि चीन के 15 शहरों तक पहुंच गया है और शांगहाई से हांगकांग तक सीमापार मार्ग के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कदम बढ़ा चुका है।

वर्तमान में, एयर चाइना, चाइना ईस्टर्न एयरलाइंस और चाइना सदर्न एयरलाइंस के पास वाणिज्यिक परिचालन में कुल 18 सी919 विमान हैं, जो 20 से अधिक वाणिज्यिक मार्गों पर उड़ान भरते हैं, 36,000 से अधिक घंटों तक सुरक्षित उड़ान भरे हैं और कुल मिलाकर 20.5 लाख से अधिक यात्रियों को परिवहन किया है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा, प्रयागराज से मुद्रित एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश से प्रकाशित
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI NO. UPHIN/2001/09025
प्रबन्धक
अनूप मिश्रा
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादो का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा

नेपाल : दो महीने बाद फिर सड़कों पर उतरेगा राजशाही समर्थक गुट, शांतिपूर्ण प्रदर्शन की घोषणा

काठमांडू। नेपाल में राजतंत्र और हिंदू राष्ट्र की पुनर्स्थापना की मांग को लेकर राजतंत्र समर्थक गुट ने दो महीने बाद एक बार फिर से प्रदर्शन करने का ऐलान किया है। यह प्रदर्शन गुरुवार को काठमांडू के रत्नपार्क में आयोजित किया जाएगा।

राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी (आरपीपी) के अध्यक्ष राजेंद्र लिंगदेन ने बुधवार को पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि यह प्रदर्शन पूरी तरह से शांतिपूर्ण, नागरिक नियम और सत्याग्रह के सिद्धांतों पर आधारित होगा। उन्होंने साफ किया कि प्रदर्शन को प्रशासन की अनुमति मिले या नहीं, इसे रत्नपार्क में ही किया जाएगा।

लिंगदेन ने कहा, ह्लहमारा प्रदर्शन हिंसक नहीं होगा। यह पूरी तरह से हमारे नियंत्रण में रहेगा और रिंग रोड के बाहर नहीं जाएगा। प्रशासन अनुमति नहीं भी देता है, तब भी हम रत्नपार्क में ही शांतिपूर्वक विरोध प्रदर्शन करेंगे।

लिंगदेन ने प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली पर आरोप लगाया कि वह उनकी पार्टी के कार्यक्रम में बाधा डालने की कोशिश कर रहे हैं।

लिंगदेन ने कहा, प्रधानमंत्री ओली की मंशा स्पष्ट है कि वे गुरुवार को अशांति फैलाना चाहते हैं। उन्होंने जो बयान दिया है, वह बेहद आपत्तिजनक है। उन्हें अपना बयान वापस लेना चाहिए या इस्तीफा देना चाहिए। हमने पार्क में शांतिपूर्ण कार्यक्रम की घोषणा की थी, लेकिन प्रधानमंत्री की पार्टी उसी क्षेत्र में अपने कार्यकर्ताओं को बुला रही है, जिससे टकराव की स्थिति बन सकती है। पत्रकारों को इस विषय पर निष्पक्ष रिपोर्टिंग करनी चाहिए।

इस विरोध प्रदर्शन में विभिन्न राजतंत्रवादी और हिंदू राष्ट्र समर्थक संगठन भी एकजुट हो रहे हैं, जो नेपाल में गणतंत्र, संघीयता और धर्मनिरपेक्षता को खत्म कर राजतंत्र और हिंदू राष्ट्र की बहाली की मांग कर रहे हैं।इस बीच राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी नेपाल (आरपीपी-एन) के अध्यक्ष कमल थापा ने बताया कि अब तक बिखरे हुए और निष्क्रिय राजतंत्रवादी गुट एकजुट हो गए हैं।

थापा ने कहा, हम अब एकता की ओर बढ़ चुके हैं। यह समय उपयुक्त है कि हम गणतंत्र, संघीयता और धर्मनिरपेक्षता को समाप्त करने की दिशा में ठोस पहल करें। यह वैचारिक लड़ाई है और हमें अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है।ह्व

उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि यदि जनता और राजनीतिक दलों के बीच सहमति बनती है, तो पूर्व राजा ज्ञानेंद्र शाह के पोते दयेंद्र शाह को नेपाल का अगला राजा बनाया जा सकता है।थापा ने कहा, ह्लयदि ज्ञानेंद्र शाह को लेकर लोगों को कोई संकोच हो, तो हृदयेंद्र शाह को भी विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। राजतंत्र किसी एक व्यक्ति का नाम नहीं, यह एक विचारधारा है। उत्तराधिकारी वही होना चाहिए, जो पृथ्वीनारायण शाह के वंश से हो। कौन होगा, यह राष्ट्रीय सहमति से तय होना चाहिए।

28 मार्च को काठमांडू के टिंकुने क्षेत्र में हुए राजतंत्र समर्थक प्रदर्शन के दौरान हिंसा भड़क गई थी, जिसमें दो लोगों की मौत हो गई थी और सैकड़ों लोग घायल हुए थे। उस समय हुई हिंसा में लगभग 460 मिलियन नेपाली रुपए की संपत्ति को नुकसान पहुंचा था।